नशा : एक अभिशाप

एस० कौसर लईक़

विषय सूची

'शुरू ईश्वर के नाम से।'

दो शब्द

आज जितने भी अपराध पाए जाते हैं, प्रायः उन सभी की जड़ में नशे की एक बड़ी भूमिका पाई जाती है। वे अपराध चाहे घरेलू हिंसा से सम्बन्धित हों या सामाजिक सभी के मूल में किसी-न-किसी नशे का हाथ होना एक सामान्य-सी बात हो चुकी है। अपराध के अलावा मादक पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ाने का भी एक मुख्य कारण बन रहा है। नशे के कारण मृत्यु-दर में भी चिन्ताजनक वृद्धि हुई है। सड़क हादसों में प्रायः लोग नशे की हालत में पाए जाते हैं। आज नशे की चपेट में बड़े-बूढ़े, युवक यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे और महिलाएँ भी आ रही हैं। यद्यपि नशा-मुक्त समाज बनाने हेतु सरकार सहित कई समाजसेवी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं। किन्तु खेद का विषय यह है कि उनके प्रयासों और उपायों का, कुछ अपवाद को छोड़कर, कोई सुखद और अपेक्षित परिणाम सामने नहीं दिखाई देता। इसके कारणों पर गम्भीरता से विचार करने और उनका समाधान निकालने की आवश्यकता है।

यह भी आवश्यकता है कि लोगों में नशा और मादक पदार्थों के सेवन से होनेवाली तबाहकारियों के प्रति जागृति पैदा की जाए और उनका आत्म-बल बढ़ाया जाए। इसके साथ ही उन लोगों को जिन्हें हर प्रकार के मादक द्रव्यों का सेवन करने से दूर रहने का सौभाग्य प्राप्त है, किन्तु वे समाज के प्रति बेपरवाह हैं उनको समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का एहसास कराया जाए।

यह पुस्तक जो आपके हाथ में है, इन्हीं विभिन्न विषयों पर वार्ता करती हुई एक अनुपम पुस्तक है, जिसे विविध विषयों के जानकार एवं सामाजिक

कार्यकर्ता एस॰ कौसर लईक़ ने संकलित किया है। इस पुस्तक का अध्ययन करते हुए हमारे सुहृदय पाठक सहज ही इस तथ्य का एहसास करेंगे कि लेखक तबाह होती मानवता के प्रति कितनी अन्तर्वेदना एवं द्रवित-हृदय रखता है और चाहता है कि मनुष्य मनुष्य बनकर, पूरे होशोहवास के साथ जीवन जिए। मानव अपने जीवन में सजगता, भार्तृत्व और प्यार को स्थान दे और क्रूर, हिंसक व पाषाण-हृदय बना देनेवाली सभी चीज़ों का परित्याग करे। इसमें राष्ट्र का हित भी समाहित है और सामाजिक समस्याओं का समाधान भी।

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि॰) हिन्दी भाषा में व्यक्ति, समाज एवं देश के कल्याण हेतु पुस्तकें तैयार करने के शुभ-कार्य में लगा हुआ है। इस पुस्तक को प्रकाशित करते हुए हमें बड़े हर्ष का एहसास हो रहा है। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक नशा-मुक्त समाज बनाने में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इसे सामाजिक सुधार एवं उत्थान का एक प्रभावकारी साधन सिद्ध करे। (आमीन)

—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

एकेडमिक डाइरेक्टर

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि॰)

दिल्ली

भूमिका

एक रात लगभग दस बजे किसी काम से गली में निकला। थोड़ी दूर ही चला था कि क्या देखता हूँ कि एक अधेड़ उम्र की औरत फटेहाल कपड़ों में अपने दो बच्चों के साथ एक आदमी को पकड़कर खड़ा करने का प्रयास कर रही है। व्यक्ति भी अधेड़ उम्र का था और बेहोशी की दशा में था। मैं कौतूहलवश उनकी ओर बढ़ा और क़रीब पहुँचकर पूछा : "बहन क्या हो गया?" वह रोआंसे स्वर में बोली कि यह मेरा आदमी (पति) है। शराब पी रखी है। यह सुबह काम पर गया था। शाम होने के बाद घर पर इसका इंतज़ार कर रही थी कि कुछ लाए तो पकाकर बच्चों का पेट भरूँ। जब देर रात तक यह घर नहीं पहुँचा तो बच्चों को लेकर इन्हें देखने के लिए निकली। यह यहाँ पर शराब पीकर पड़ा हुआ है। बच्चे भूखे हैं और बेटी घर पर बीमार पड़ी है। यह जो कमाकर लाता है, उसकी शराब पी जाता है। कुछ कहती हूँ तो मारता-पीटता और लड़ाई-झगड़ा करता है। मैं औरत परानी क्या करूँ!

उस आदमी का शरीर नशे से ढीला पड़ गया था और इतना भारी हो गया था कि वह औरत उसे मुश्किल से हिला पा रही थी। मैंने उस औरत से कहा, 'बहन, इस पर पानी डाल दो और इसे यहीं छोड़ दो। जब नशा उतर जाएगा तो यह ख़ुद घर पर चला आएगा।' मेरे जेब में कुछ रुपए पड़े थे। हाथ में लेकर उस औरत की तरफ़ बढ़ा दिए यह कहते हुए कि बहन! इन बच्चों को कुछ ख़रीद कर खिला देना। वह इतनी ग़ैरतदार (स्वाभिमानी) थी कि पैसा लेने से साफ़ इनकार करती रही। मेरे यह ज़िद करने पर कि एक भाई अपनी बहन की मदद कर रहा है, ले लो। तब बड़े भारी मन से लेती हुई बोली, "भइया अगर पैसों का इंतिज़ाम हो जाएगा तो मैं वापस कर

दूँगी।" मैंने कहा कि बहन, जैसी आपकी मर्ज़ी और मैं आगे बढ़ गया।

दूसरे मुहल्ले में जहाँ मुझे काम था पहुँचा, तो देखा कि एक बड़ी भीड़ एक दरवाज़े पर जमा है। क़रीब गया तो मालूम हुआ कि एक आदमी अपनी पत्नी और बच्चों को बुरी तरह पीट रखा है और लोगों को गालियाँ बक रहा है। मैंने और तफ़सील से जानना चाहा, तो लोगों ने बताया कि यह आदमी जो गालियाँ बक रहा है, इसने शराब पी रखी है। यह नशे की हालत में अपनी बीवी और बच्चों को किसी बात पर बुरी तरह पीट रहा था। चीख़-चिल्लाहट सुनकर कुछ लोगों से नहीं रहा गया, तो बीच-बचाव के लिए दौड़े। उनके छुड़ाने के बाद भी जब बीवी-बच्चों को पीटना नहीं छोड़ा, तो कुछ लोगों ने इसी को पीट दिया है। अब यह उन्हीं लोगों को गालियाँ दे रहा है। इसका हर रोज़ का यही ड्रामा है। आज तो हद ही कर दी। यह सब सुनकर मुझे बड़ी टेंशन हुई, मगर मैं कर भी क्या सकता था। मैं जल्दी में था। मैं जिस काम से घर से निकला था, वह काम निपटा कर घर वापस आ गया।

अगली सुबह अपने परिवार के साथ चाय पी रहा था, तभी मेरी बेगम बोली, "आज का अख़बार देखा! उत्तर प्रदेश, असम और बंगाल में ज़हरीली शराब पीने से कई सौ लोग मर गए। कल के अख़बार में केरला की ख़बर थी, वहाँ ज़हरीली शराब पीने से पचास लोग मर गए। बेगम आगे कहने लगी कि उसकी सहेली का आदमी कितना अच्छा व्यक्ति था। ख़ूब कमाता और बच्चों पर पूरा ध्यान देता था, लेकिन किसी कुसंगति में पड़कर पहले शराब पीना शुरू किया, फिर गाँजा, अफ़ीम पीने लगा। अब तो वह किसी अजीब चीज़ का नशा करके घर में पड़ा रहता है। काम पर नहीं जाता और बीमार रहने लगा है। तभी अख़बार को मेरी तरफ़ करते हुए बेगम ने कहा, इसे देखिए, इस दरिन्दे को! रात को शराब पीकर आया और अपनी बेटी से ही दुष्कर्म करना चाहा, तो बेटी ने उसे मार डाला। बेगम कुछ देर रुकी रहीं, फिर बोलीं कि मेरी सहेली बता रही थी कि उसका बेटा बहुत ज़्यादा नशा करने लगा है। पहले वह छिप-छिपकर शराब पीता था, अब तो खुलेआम गांजा, चरस तक लेने लगा है। सूखकर काँटा हो गया है, काम-धंधा भी छोड़

रखा है। नशा छुड़ाने का कोई उपाय है क्या?

मेरी माँ ने मेरा कॉलेज में एडमिशन हो जाने के बाद मुझे नसीहत की कि बेटे! चाहे जैसी संगति में रहना, लेकिन कभी कोई नशा नहीं करना। यह हमारी कौटुंबिक परम्परा और धर्म के विरुद्ध है और मानव-जीवन को तबाह कर देनेवाली चीज़ भी। माँ आगे नसीहत करते हुए बोली कि हमारे इलाक़े का एक बहुत बड़ा कारोबारी आदमी था। बड़ी चल-अचल सम्पत्ति का मालिक था। उसे ऊपरवाले (ईश्वर) ने एक ख़ूबसूरत बेटा दे रखा था। उससे वह बेइंतिहा प्यार करता था। उसने उसे उच्च शिक्षा के लिए बाहर भेजा। वहाँ वह बेटा ग़लत संगति में पड़ गया और नशा करने लगा। वापस आने के बाद वह घर पर पहले छिप-छिपकर नशा करता रहा, लेकिन कुछ ही दिन बाद वह खुलकर शराब, गाँजा और तरह-तरह की नशीली चीज़ों का सेवन करने लगा। पिता ने हर तरह से उसे रोकने की कोशिश की, मगर वह असफल रहा। बीच-बीच में बेटा बीमार भी पड़ जाता और दवा-इलाज से ठीक भी हो जाता, लेकिन ठीक हो जाने के बाद फिर नशा करने लगता। अन्ततः वह एक बार ऐसा बीमार पड़ा कि ठीक ही न हुआ। डॉक्टरों ने कहा था कि उसके गुर्दे और लीवर दोनों ही ख़राब हो चुके हैं। वह उसी बीमारी में मर गया। हालाँकि बाप ने उसके इलाज में उसके वज़न की रक़म ख़र्च कर दी थी।

बीवी की पहले ही मृत्यु हो चुकी थी अब बेटे की मौत का बाप पर ऐसा ग़म सवार हुआ कि उसका दिल कारोबार से बिलकुल बेज़ार हो गया। पहले वह नींद के लिए नींद की गोलियाँ लेता रहा, बाद में वह भी नशा करने लगा। फिर तरह-तरह की शराबों और विभिन्न प्रकार की नशीली चीज़ों में पैसा उड़ाने लगा। शुरू में जमा माल से काम चलता रहा, उसके बाद चल-अचल सम्पत्तियाँ बेचकर नशा करने लगा। ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में उस पर ऐसी निर्धनता आई कि पैसे-पैसे के लिए तरसने लगा और ऐसी ही दशा में वह भी दुनिया से चला गया। माँ ने कहा कि इसी लिए बेटे! किसी भी प्रकार की नशीली चीज़ का सेवन कभी मत करना। नशा ज़िन्दगी तबाह कर डालता है।

इसी प्रकार की कई घटनाएँ अख़बारों और न्यज़ू चैनलों में भी आती रहती हैं, जिन्हें पढ़कर या देखकर दिल दहल उठता है।

वास्तव में मानव-जीवन के लिए मादक चीज़ों का सेवन एक अभिशाप है। अब तक समाज की अवनति में नशावर चीज़ों के उपभोग की एक बड़ी भूमिका रही है। संभवतः इसी लिए भारत के कुछ राज्यों ने शराब और अन्य मादक पदार्थों पर पूर्णतः प्रतिबन्ध भी लगा रखा है, यद्यपि मीडिया और खोजी पत्रिकाओं से ज्ञात होता है कि स्थानीय स्तर पर लोग क़ानून की नज़रों से छिपकर शराब और अन्य चीज़ों का सेवन अब भी कर रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में तो मादक पदार्थों की खपत की मात्रा में पहले से भी अधिक वृद्धि हो गई है।

उपरोक्त बातें मेरे मन में एक प्रश्न सदैव खड़ा करती रही कि आख़िर लोग नशाख़ोरी से क्यों नहीं बाज़ आ रहे? अपनी सेहत और जीवन को क्योंकर अपने हाथों से बरबाद कर रहे हैं? इससे लोगों को कैसे रोका जा सकता है? बहुत चिन्तन-मनन के बाद मुझे महसूस हुआ कि नशावर चीज़ों के घातक दुष्प्रभावों से लोगों का अनभिज्ञ होना इसका मुख्य कारण है। मनुष्य किसी भी चीज़ का परित्याग तभी करता है और उससे दूर भागता है जब उसके मस्तिष्क में उस वस्तु की विनाशकारिता या तकलीफ़देह होने का पूर्ण विश्वास हो जाता है। एक बाशऊर व्यक्ति आग से इसी लिए दूर भागता है कि उसे पूर्णतः ज्ञात होता है कि वह उसे जला देगी, किन्तु एक अबोध शिशु अनभिज्ञता के कारण आग के अंगारे को पकड़ने में कोई संकोच नहीं करता। अतः मनुष्य को मादक चीज़ों के उपभोग से बचाने और नशा से मुक्त रखने के लिए अनिवार्य है कि नशावर चीज़ों की तबाहकारियों से मनुष्य को आभिज्ञ किया जाए और उनकी विनाशकारिता उसके मस्तिष्क में बिठाई जाए।

हर मनुष्य प्रथमतः अपनी सेहत की रक्षा चाहता है यानी सेहतमन्द रहना चाहता है और इसी के साथ वह अपने माल और धर्म की रक्षा और अपनी प्रतिष्ठा भी बनाए रखना चाहता है। ये आकांक्षाएँ लगभग सभी मनुष्य के अन्तःकरण में पाई जाती हैं; यह अलग बात है कि किसी की

अन्तःचेतना ही मर चुकी हो। अतएव मेरे हृदय के इन्हीं एहसासों ने मुझे उत्प्रेरित किया कि नशा के सम्बन्ध में मनुष्य को उसके विभिन्न दृष्टिकोणों से समझाने, चेताने और जागृत करनेवाला एक लेख लिखा जाए और वह लेख लिख डाला। यह लेख जब विद्वान एवं सामाजिक हित-चिंतक पुरुष आदरणीय मौलाना नसीम अहमद ग़ाज़ी फ़लाही साहब को दिखाया, तो पूरा लेख पढ़ने के बाद आपने बड़े ही उत्साहजनक शब्दों के साथ कहा कि यह लेख पुस्तक के रूप में प्रकाशित होना चाहिए। यह पुस्तक जो आपके हाथ में है यह उसी लेख का परिणत रूप है।

इस पुस्तक के आरम्भ में मादक चीज़ों में शराब पर विस्तृत वार्ता की गई है और विभिन्न दृष्टिकोणों से उसके स्वास्थ्य पर पड़नेवाले दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् इस पर चर्चा की गई है कि शराब विभिन्न धर्मों की दृष्टि में कितनी निकृष्ट, अप्रिय और अविधिक (हराम) वस्तु मानी जाती है। अन्त में शराब के अलावा पाए जानेवाले विभिन्न प्रकार के अन्य प्रमुख मादक पदार्थों पर संक्षिप्त में चर्चा की गई है और बताया गया है कि उनके सेवन से मानव शरीर पर कितने घातक दुष्प्रभाव पड़ते हैं।

इस पुस्तक को अन्तिम रूप देने में आदरणीय मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही साहब, मौलाना फ़ारूक़ ख़ान साहब, इन्तिज़ार नईम साहब और डॉ॰ टेकचंद बुन्देला जी (रिटायर्ड मेडिकल आफ़ीसर) का जो सहयोग, सहानुभूति और परामर्श साथ रहा वह अद्वितीय है। मैं हृदय से उनका आभारी हूँ।

इस पुस्तक की भाषा और शैली सहज, सरल और बोधगम्य रखने का पूरा प्रयास किया गया है और हर क़दम पर यह सतर्कता अपनाई गई है कि हमारी बातों से किसी भी जाति, सम्प्रदाय और धर्म को किसी प्रकार ठेस न पहुँचने पाए। फिर भी यदि किसी को कहीं पर ऐसा प्रतीत होता है, तो हम उनसे इसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

इसके साथ ही पाठकों से हमारा निवेदन है कि अध्ययन के दौरान यदि कोई त्रुटि मिलती है तो वे उससे हमें अवगत करें। हम उनका आभारी होंगे और अगले संस्करण में अपना सुधार करने का पूरा प्रयास करेंगे।

इस पुस्तक की रचना का लक्ष्य लोगों को मादक पदार्थों का सेवन करने से बचाना और दूर रखना है कि लोग उनके कारण अपना जीवन तबाह व बरबाद कर रहे हैं।

ईश्वर से प्रार्थना है कि ईश्वर इस पुस्तक को मानव-हितार्थ जिस शुभ-भावना एवं समानुभूति के साथ लिखी गई है, उसे सहज ही फलित करे। (आमीन)

—एस॰ कौसर लईक़
28 जुलाई 2021 ई॰

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान और बड़ा कृपाशील है।"

शराब

शराब के सम्बन्ध में वैश्विक नीति

विश्व के लगभग सभी समाज, समुदाय, धर्म और राष्ट्र अपने लोगों को नियंत्रित एवं सुव्यवस्थित रखने के लिए विभिन्न नियम और क़ानून बनाए हुए हैं और बनाते हैं। वे अपने लोगों के लिए अपने दिशा-निर्देश निर्धारित करते हैं कि लोग उनके मुताबिक़ अपनी जीवन-प्रक्रिया अपनाएँ। विश्व के तमाम समाज और सम्प्रदायों के अपने भिन्न-भिन्न नियम और क़ानून हैं। विश्व के बहुत-से सामाजिक क़ानून और विधान ऐसे हैं जो किसी एक चीज़ को किसी एक समाज या समुदाय के लिए वैध करते हैं, तो दूसरे के लिए अवैध।

इसी प्रकार बहुत-से सामाजिक क़ानून और विधान ऐसे भी हैं जो सभी समाज के लिए एक समान रूप से किसी चीज़ को वैध या अवैध करते हैं। उदाहरणतः व्यभिचार, चोरी, झूठ, निर्दोषों की हत्या इत्यादि को सभी अवैध और ग़ैर-क़ानूनी मानते हैं। इसी प्रकार नैतिकता, सच्चाई, न्याय व निष्पक्षता के वैध एवं अपरिहार्य होने का क़ानून आदि सभी समाज में वैध पाया जाता है। ऐसे क़ानून और विधान जो सभी समाज में समरूपता से पाए जाते हैं, उनको उभयनिष्ठ सामाजिक क़ानून या विधान (Common Social Law or Statute) की संज्ञा दी जा सकती है और क़ानूनों और विधानों को जो हर समाज के लिए अपनी अलग-अलग हैसियत रखते हैं, या एक-दूसरे के विपरीत पाए जाते हैं—को विषम सामाजिक क़ानून कह सकते हैं। इन्हीं सम (उभयनिष्ठ) और विषम क़ानून के मध्य मद्यपान यानी शराब पीने के सम्बन्ध का क़ानून है। विश्व के लगभग सभी समाज, समुदाय, धर्म व राष्ट्र

स्वच्छंद रूप से शराब पीने पर प्रतिबन्ध लगाए हुए हैं। अर्थात् हर देश और समाज में शराब के सेवन को नियंत्रित एवं अंकुशित रखने के क़ानून पाए जाते हैं। अमेरिका में वहाँ के संविधान में संशोधन करके सन् 1920 ई॰ में शराब पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया गया था और वहाँ (अमेरिका में) शराब के निर्माण, उसके परिवहन और सेवन आदि सभी को ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर दिया गया था। यद्यपि वहाँ के लोगों का मानसिक प्रशिक्षण न हो पाने के कारण वहाँ की सरकार का यह प्रयास असफल हो गया और सन् 1933 ई॰ को यह प्रतिबन्ध विवशतः हटा लिया गया। लेकिन अब भी वहाँ सार्वजनिक स्थलों और पार्कों में शराब पीने के विरुद्ध सख़्त क़ानून हैं। इसी प्रकार इटली जिसकी संस्कृति में ही शराबनोशी (मद्यपान) का चलन पाया जाता था और वहाँ शराब स्वच्छंद रूप से पी जाती थी। अब (2009 ई॰ में) शराबनोशी से बढ़ते अपराध और मृत्युदर पर चिन्तित होकर वहाँ की सरकार ने शराबनोशी को कम करने की दिशा में क़दम बढ़ाते हुए वहाँ 16 वर्ष या इससे कम आयु के किशोर के हाथ शराब बेचने और 16 वर्ष या इससे कम आयु के युवक को शराब पीने पर पाबन्दी लगा दी गई है। इस क़ानून के उल्लंघन पर सख़्त कार्रवाई का प्रावधान किया गया है। कहा गया है कि किसी किशोर को शराब पिए हुए पाए जाने पर किशोर के माता-पिता और जहाँ से उसने शराब ख़रीदी थी इन सभी के विरुद्ध सख़्त कार्रवाई की जाएगी।[1] विश्व के कई ऐसे भी देश हैं जहाँ शराब पर पूरी तरह प्रतिबंध है। यथा—ईरान, कुवैत, लीबिया, सऊदी अरबिया, सूडान, यमन और संयुक्त अरब अमीरात आदि। यद्यपि यहाँ पर्यटकों को बंद कमरे में शराब पीने की अनुमति है। इसी प्रकार भारत (India) में शराब पीने से होनेवाली मृत्यु और समाज में बढ़ते अपराधों, उपद्रवों व पारिवारिक बिखराव एवं तबाही को देखकर यहाँ के कई राज्यों में शराब पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया गया था और आज भी कुछ राज्यों में प्रतिबन्ध लगा हुआ है। यह अलग बात है कि प्रतिबन्ध लगाने के बाद सरकारों को अपना कितना लक्ष्य प्राप्त हो सका या लक्ष्य प्राप्त हो रहा है?—एक अलग वार्ता का विषय है।

1. बी॰बी॰सी॰ न्यूज़, उर्दू, 19 जुलाई 2009 ई॰

किन्तु यहाँ पर यह संकेत क. देना अपरिहार्य प्रतीत होता है कि इस सन्दर्भ में लोगों का पहले मानसिक प्रशिक्षण अनिवार्य था और इस तथ्य का उन्हें पूर्ण बोध करा देना ज़रूरी था कि शराब दवा नहीं, बल्कि ज़हर है।

शराब पर एक संक्षिप्त परिचायक वार्ता

शराब वह तरल पेय है, जिसमें नशा लानेवाला तत्व पाया जाता है। इस नशा लानेवाले मूल तत्व का नाम 'अल्कोहल' है। क्योंकि शराब का मुख्य तत्व "अल्कोहल" होता है, इसी कारण शराब का दूसरा नाम 'अल्कोहल' भी है।

रासायनिक संरचना

अल्कोहल के भी कई प्रकार हैं, उनमें से वह अल्कोहल जिसके सेवन से नशा और मादकता आती है और जो यहाँ वार्ता की विषयवस्तु है, उसका रासायनिक नाम 'एथेनॉल' है। इसे एथाइल अल्कोहल (Ethyl Alcohol), ग्रैन अल्कोहल (Grain Alcohol), ड्रिंकिंग अल्कोहल (drinking Alcohol) या मात्र 'अल्कोहल' (Alcohol) बोला जाता है। यह एक कार्बनिक यौगिक होता है। इसका रासायनिक सूत्र C_2H_5OH या CH_3CH_2OH है। वैसे इसका रासायनिक सूत्र संक्षिप्त में C_2H_6O लिखा जाता है।

शराब के प्रकार

शराब जिन पदार्थों से बनाई जाती है या उसके बनाए जाने में जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, उसके आधार पर उन शराबों के नाम रखे जाते हैं। लेकिन सभी प्रकार की शराब में मूल तत्व जो नशा लानेवाला होता है, यानी अल्कोहल (एथेनॉल) न्यूनाधिक प्रति मात्रा[1] में अवश्यतः मौजूद होता है।

---

1. किसी भी शराब में कितनी मात्रा में अल्कोहल प्रति ईकाई विद्यमान है, इसे संक्षिप्त में A.B.V. अर्थात् "Alcohol by Volume" लिखा जाता है। हमने 'A.B.V.' के लिए हिन्दी में प्रतिमात्रा लिखा है। फिर भी स्पष्ट रहे कि 'A.B.V.' ही अन्तर्राष्ट्रीय पैमाना है।

जौ के किण्वन (Fermentation) द्वारा तैयार की जानेवाली शराब को 'बियर' कहा जाता है। यह गेहूँ, मक्का, चावल से भी बनाई जाती है, लेकिन मुख्यतः इसे जौ से ही बनाया जाता है। इसमें अल्कोहल 4 से 6% होता है, किन्तु कुछ परिस्थिति में इसमें अल्कोहल 1% से कम और 20% प्रतिमात्रा से अधिक भी होता है। यह संसार भर में सभी मादक पेयों (शराबों) में सबसे अधिक पी जानेवाली शराब है। भारत में इसे 'जौ की शराब' या 'आबे-जौ' के नाम से भी बोला जाता है। क्योंकि संस्कृत में 'जौ' को 'यव' और 'मादक पेय' को 'सुरा' कहा जाता है, इसी कारण संस्कृत में इसका दूसरा नाम 'यवसुरा' भी है। गेहूँ, मक्का, जौ और मुख्यतः चावल से विश्व के सभी देशों में शराब बनाई जाती है और उनके अपनी-अपनी भाषा के अनुसार भिन्न-भिन्न नाम रखे जाते हैं। यथा—भारत में अपो (Apo) या अपुंग (Apung) तथा चोलाई (Cholai), कोरिया में चिउंगजु (Cheongju), डांसुल (Dansul), ग्वाहा-जू आदि। चीन में मिजिउ (Mijiu), हांगजु (Hangju), जिआन (Xian), भूटान में आरा (Ara) या आरंग (Arang), जापान में साके (Sake) आदि।

दुनिया भर में गन्ने से तैयार की जानेवाली शराब को 'रम' कहा जाता है। इसका उत्पादन कैरीबियन और अमेरिकी देशों में अधिक मात्रा में होता है। भारत और फिलीपींस भी इसका उत्पादन पर्याप्त मात्रा में करता है। भारत में इसकी खपत जहाँ 2008 ई. में 3310 लीटर थी, वहीं 2018 ई. में बढ़कर 3880 लीटर पर पहुँच गई थी।[1] घोड़ी के दूध से तैयार की जानेवाली शराब को 'कूमीस' कहा जाता है। 'कूमीस' को मंगोलिया में ऐरग (Airag) बोला जाता है। तमाम शराबों में 'कूमीस' कम नशा लानेवाली शराब होती है। इसमें अल्कोहल की मात्रा मात्र 2% प्रति इकाई होती है। 'व्हिस्की' जो बियर का ही एक प्रकार है, यह भी 'जौ' के अतिरिक्त राई या माल्ट-राई, गेहूँ, मक्का (मकई) से तैयार की जाती है, इसमें अल्कोहल 60 से 90% प्रतिमात्रा होती है।

1. दे. अमर उजाला, 17 अगस्त 2019 ई.

फलों के किण्वित (Fenuened) रसों का आसवन (Distillation) करके बनाई गई शराब को 'ब्राण्डी' कहा जाता है। ब्राण्डी में अल्कोहल 35 से 60% प्रति मात्रा होता है। वैसे यह शराब सामान्यतः अंगूर से ही बनाई जाती है, लेकिन कुछ मादक-पेय-निर्माता अन्य फलों से भी बनाते हैं और यह जिस फल से तैयार की जाती है उस फल के नाम के साथ इसका नाम रखा जाता है। उदाहरणतः एप्पल या सेब से तैयार की जानेवाली ब्राण्डी को एप्पल या सेब की ब्राण्डी (Apple Brandy) कहा जाता है, अखरोट से तैयार की जानेवाली ब्राण्डी को अखरोट की ब्राण्डी यानी एप्रीकोट ब्राण्डी (Apricot Brandy) कहा जाता है।

लेकिन अगर किसी ब्राण्डी में किसी फल का नाम नहीं है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह ब्राण्डी अंगूर से तैयार की गई है। अंगूर और अन्य फलों से एक प्रकार की और शराब बनाई जाती है, उसका नाम 'हाला' या 'वाइन' (Wine) रखा गया है। यह विशेषकर अंगूर के रस में उपस्थित शर्करा को किण्वित करके एथेनॉल व कार्बन डाईऑक्साइड में परिवर्तित करके बनाई जाती है। सबसे पहले 'हाला' मधु यानी शहद को किण्वित करके बनाई जाती थी, फिर बाद में अंगूर से बनाई जाने लगी। आरंभिक समय में शहद से ही 'हाला' तैयार की जाती थी, इसी कारण इस शराब का दूसरा नाम 'मधु' या 'शहद' भी पड़ा, किन्तु यह नाम आज त्यक्त-प्राय है।

गेहूँ या गन्ने के रस से बनाई जानेवाली एक प्रकार की और शराब है, इसे 'ठर्रा' के नाम से जाना जाता है। इसे 'देशी दारू', 'कच्ची शराब' या 'कुत्ता-मार' जैसे और अन्य नामों से भी पुकारा जाता है। यह सभी शराबों में सबसे अधिक दूषित, अशुद्ध होती है, जिसके कारण स्वास्थ्य के लिए यह अत्यन्त हानिकारक होती है। इसके निर्माण और विक्रय पर भारत में प्रतिबन्ध है, लेकिन ग्रामीणांचलों में अवैधतः कुछ लोग इसका निर्माण करते हैं। क्योंकि इसपर प्रतिबन्ध है और इसके निर्माण में भी कोई अधिक व्यय नहीं आता है। अतः यह बहुत सस्ती क़ीमत में मिल जाती है। सस्ती और कम-से-कम क़ीमत में प्राप्त हो जाने के कारण मुख्यतः ग़रीबों और मध्यम वर्ग के शराबियों का यह मुख्य मादक पेय मानी जाती है। भारत में शराब

से मरनेवालों की संख्या सबसे अधिक इसी शराब के सेवन से है।

एक शराब महुए की शराब होती है, जो 'महुआ' नामक पेड़ के फूल से तैयार की जाती है। यह भी कच्ची शराब की तरह दूषित एवं विषैली शराब होती है। भारत में झाबुआ, छत्तीसगढ़ के राजनादगांव, दुर्ग और बस्तर में प्रमुख रूप से गरीबों द्वारा पी जानेवाली शराब है। इसी प्रकार दक्षिण भारत में प्रमुखता से पिया जानेवाला एक मादक द्रव्य 'ताड़ी' है, जो शराब के ही प्रकार में से एक है। इसे ताड़ की विभिन्न प्रजाति के वृक्षों के रस से तैयार किया जाता है। यह उत्तर प्रदेश, झारखण्ड और बिहार में तथा समुद्रीय तटवर्ती क्षेत्रों में अधिक पिया जाता है। शराब की एक और क़िस्म है 'हड़िया' यह चावल (भात) से बनती है। यह भारत के राज्य बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में अधिक प्रसिद्ध है। भारत में एक शराब 'फेनी' भी है, जो मात्र गोवा में पाई जाती है। यह दो प्रकार की होती है—एक नारियल से तैयार की जानेवाली 'नारियल फेनी' और दूसरी 'काजू' से तैयार की जानेवाली 'काजू फेनी'। भारत के पूर्वोत्तर में स्थित त्रिपुरा राज्य में चावल को जल में डालकर किण्वित करके तैयार की जानेवाली बियर के प्रकार की एक और शराब है; वहाँ इसे चुआक कहा जाता है। यह त्रिपुरा में सामाजिक समारोहों में पी जाती है और वहाँ की परंपरानुसार इसका पहला भोग ग्राम के बड़े-बूढ़े करते हैं।[1]

शराब का सेवन

शराब के पीने की प्रथा लगभग सभी देशों और राष्ट्रों में पाई जाती है।[2] असभ्य और असंस्कृत काल में शराब हर उत्सव और त्योहारों में विशेष रूप से पी जाती थी। यही कारण है कि उस काल में शराब पीने और उसके उपद्रव से लोगों की मृत्यु दर बहुत अधिक थी। यद्यपि आज जागृत एवं सभ्य-काल में भी शराब के इस्तेमाल की मात्रा में कोई विशिष्ट कमी नहीं आई है, बल्कि कुछ देशों में शराब पीने की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

1. Folk-Lore, India, Vol. 20-21, Publi. 1979

2. इस सन्दर्भ में इस्लामिक राष्ट्र अपवाद हो सकते हैं।

हाँ, यदि कमी आई है तो अशुद्ध एवं अशोधित शराब की मात्रा के उपभोग में। तदपि कुछ देशों में शराब के उपभोग की मात्रा में भी कमी आई है और कुछ देशों में शराब की औसतन खपत तो शून्यता के निकट तक पहुँच गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने अपने एक सर्वेक्षण की एक सूची, जिसमें 191 देशों को शामिल किया है सन् 2014 ई॰ में प्रकाशित की थी। इसमें सन् 2010 ई॰ में लोगों द्वारा शराब के उपभोग के आंकड़ों को दिखाया गया है और बताया गया है कि किस देश में शराब की कितनी औसतन मात्रा एक वर्ष में एक व्यक्ति द्वारा उपभोग की जाती है। इस सर्वे के अनुसार बेलारूस (Belarus) शराब के उपभोग में सर्वोपरि है। वहाँ एक व्यक्ति औसतन 17.6 लीटर प्रतिवर्ष शराब का उपभोग करता है। दूसरे स्थान पर गणराज्य मोल्दोवा (Moldova) है, यहाँ शराब का उपभोग औसतन 16.8 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है। जबकि तीसरे स्थान पर लिथुआनिया (Lithuania) है। यहाँ औसतन एक वर्ष में एक व्यक्ति द्वारा शराब का उपभोग 15.5 लीटर है। इस सूची में सबसे कम शराब की खपत कुवैत, लीबिया, मौरीतानिया (Mauritania) और पाकिस्तान में दिखाई गई है। यहाँ शराब की औसतन खपत मात्र 0.1 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष पाई गई है। इस सूची में रूस का चौथा स्थान है। यहाँ शराब की खपत 15.1 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष है। रोमानिया, यूक्रेन क्रमशः पाँचवें और छठे स्थान पर हैं। यूनाइटेड किंगडम (U.K.) पच्चीसवें स्थान पर (11.6 लीटर) और यूनाइटेड स्टेट ऑफ़ अमेरिका का 48वाँ स्थान है (9.2 लीटर)। चीन का स्थान 88वाँ है, यहाँ औसतन शराब का उपभोग 6.7 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है। यूनाइटेड अरब अमीरात का स्थान 117वाँ है, यहाँ 4.4 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है। हमारे प्यारे देश भारत का 119वाँ स्थान है। यहाँ शराब का उपभोग 4.3 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष है। यद्यपि डॉयचे वेले (Deutsche Welle) हिंदी 25 सितम्बर 2018 ई॰ में प्रकाशित समाचार के मुताबिक़ भारत में शराब की खपत 2005 ई॰ में घटकर 2.4 लीटर प्रतिवर्ष हो गई थी, जो 2010 के आंकड़े से लगभग आधी थी। लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्वेक्षण के आधार से डॉयचे वेव ने बताया कि भारत में

2005 ई॰ से 2016 ई॰ के मध्य शराब की खपत 2005 ई॰ में खपत की मात्रा की दोगुने से भी अधिक होकर 5.7 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष हो गई है। अमर उजाला (17 अगस्त 2019 ई॰) ने बताया है कि 2008 ई॰ में भारत में शराब की खपत 16,098 लाख लीटर थी, जो 2018 ई॰ में बढ़कर 27382 लाख लीटर हो गई है। जबकि इसमें बीयर, वाइन और वोडका शराब की खपत शामिल नहीं है। बीयर की खपत 2008 ई॰ में 10,000 लाख लीटर थी, जो 2018 ई॰ में बढ़कर 24,250 लाख लीटर यानी 142% की दर से वृद्धि हुई। वाइन की खपत 2008 ई॰ में 113 लाख लीटर थी, जो 2018 ई॰ में 307 लाख लीटर हो गई। इसकी खपत 10 साल में 172% बढ़ गई। इसी प्रकार रूसी मूल की शराब वोदका की भारत में खपत 2008 में 362 लाख लीटर थी, जो 2018 ई॰ में बढ़कर 803 लाख लीटर हो गई। इसकी खपत दर 10 वर्ष में 122% बढ़ी। एक रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा शराब का बाज़ार बन चुका है। यहाँ अल्कोहल यानी शराब उद्योग सबसे अधिक तेज़ी से फलने-फूलनेवाले उद्योग बनते जा रहे हैं। जर्मनी की न्यूज़ पत्रिका डायचे वेव ने एक गैर सरकारी संगठन के प्रमुख दिलीप मोहंती की समीक्षा शराब के संदर्भ में उद्धृत करते हुए लिखता है कि 'देश में हाल के वर्षों में अल्कोहल निर्माता कंपनियों की बाढ़-सी आ गई है। हर महीने बाज़ार में कोई न कोई नया ब्रांड आ जाता है।' मोहंती के अनुसार—'देश में शराब की खपत बढ़ने के मुख्य दो कारण हैं : एक जागरूकता की कमी और दूसरी उपलब्धिता की सहजता।' वैसे समाजशास्त्रियों की दृष्टि में शराब की खपत बढ़ने की वजह—रहन-सहन के स्तर में सुधार, वैश्वीकरण, अभिजत्य जीवनशैली और समाज में शराब के सेवन को अब पहले की तरह बुरी नज़र से नहीं देखा जाना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि भारत में कुल आबादी का लगभग 30% लोग शराब का सेवन करते हैं। इनमें से 4 से 13 प्रतिशत लोग प्रतिदिन शराब पीते हैं। लेखक प्रभाकर, कोलकत्ता से लिखते हैं[1] कि "फ़िलहाल देश में लगभग 16 करोड़ लोग शराब का सेवन करते हैं। इसी प्रकार यह केन्द्रीय सामाजिक न्याय व

1. दे॰ डॉयचे वेले, 19 फ़रवरी 2019

सशक्तीकरण मंत्रालय और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के एक साझा सर्वेक्षण के हवाले से लिखते हैं कि भारत में छत्तीसगढ़, त्रिपुरा, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश और गोवा में शराब पीनेवालों की संख्या सबसे अधिक है। अमर उजाला (17 अगस्त 2019) के मुताबिक़ छत्तीसगढ़ में 35.6%, त्रिपुरा में 34.7%, पंजाब में 28.5%, अरुणाचल प्रदेश में 28% और गोवा में 26.4% लोग शराब पीते हैं। जबकि जम्मू-कश्मीर, मेघालय और राजस्थान में शराब सबसे कम पी जाती है। यहां क्रमशः 3.5%, 3.5%, और 2.1% लोग शराब पीते हैं।

शराब पीने के कारण

अगर शराब पीनेवालों से उनके शराब पीने की शुरुआत करने और पीते रहने के कारणों का पता किया जाए तो सभी के अलग-अलग कारण मिलते हैं। उनमें से कुछ निम्न कारण हैं—

1. दुख या ग़म भुलाने के लिए : जब व्यक्ति किसी परेशानी, दुख या ग़म में पड़ जाता है और उससे निकलने का कोई रास्ता नहीं पाता, इसी प्रकार मानसिक रूप से जब व्यक्ति इतना पीड़ित हो जाता है कि दिन का चैन और रात की नींद हराम हो जाती है, तो ऐसी स्थिति में वह चाहता है कि उसे कोई ऐसा साधन उपलब्ध हो जाए कि वह उस दुख, ग़म या परेशानी को स्थाई नहीं तो कुछ लम्हे के लिए ही भूलकर जी भर कर सो ले या कहीं और खो जाए। अतः वह इसका एक ही सहज उपाय पाता है कि वह नशा करे। लिहाज़ा वह शराबनोशी की ओर उन्मुख हो जाता है। इसमें कोई-कोई प्रथमतः एक बार पीता है, फिर दो बार, फिर धीरे-धीरे पूरी तरह शराब का आदी हो जाता है। व्यक्ति जब शराब का आदी हो जाता है, तो फिर उसके लिए दूसरी प्रकार की और अन्य मुसीबतें बढ़ जाती हैं और व्यक्ति का सामाजिक सम्मान, शारीरिक निरोगता और अर्थ का भी अपहरण हो जाता है।

2. ख़ुशी मनाने के लिए : जिस प्रकार व्यक्ति दुख या ग़म की दशा में अपने को भूल जाने की कोशिश करता है; उसी प्रकार ख़ुशी की दशा में वह

फुल इंज्वाय करने के उपाय तलाश करता है। इस हेतु वह शराब को सहज ही साधन के रूप में पाता है। अगर कुछ दोस्तों की टीम में शराब पीनेवाले हों तो उनकी माँग ही 'बियर पार्टी' की हो जाती है। ऐसी दशा में व्यक्ति अगर शराब न पीता हो तब भी पीने लगता है और फिर एक बार पिया तो पीने के बहाने निकालने लगता है और अन्ततः वह शराबी होकर रह जाता है। जब शराब की लत लग जाती है तो फिर व्यक्ति जिसकी शुरुआत ख़ुशी मनाने से करता है, उसका अन्त हर पल गम और दुख मनाने के साथ होता है। शराबी व्यक्ति समस्याओं से घिर जाने के बाद हमेशा मानसिक तनाव और डिप्रेशन में जीता है।

3. किसी दुष्कर्म हेतु दुस्साहस जुटाने के लिए : कोई ऐसा कार्य जो होश व हवास की दशा में कर पाने का व्यक्ति अपने अन्दर साहस नहीं पाता—जैसे किसी की हत्या या कोई अश्लील दुष्कर्म करना—तो वह नशे का—विशेषकर शराब का—सहारा लेता है। वह शराब पीने के बाद हर मर्यादा का उल्लंघन करने, क़ानून तोड़ने और दुष्कृत के परिणाम को भूल जाता है और कठिन-से-कठिन दुष्कार्य को अंजाम देने में बिलकुल झिझक नहीं करता। इसके बाद व्यक्ति एक बार शराब मुँह से लगा लेता है, तो फिर साधारण परिस्थिति में भी पीने लगता है।

4. दुःसंग या कुसंगति में पड़ जाना : कहा जाता है कि 'जैसी संगत वैसी रंगत।' अगर साथी लोग नेक और चरित्रवान हों तो व्यक्ति यदि कुचरित्र भी हो तो उसमें सुधार आ जाता है, लेकिन अगर सभी साथी कुप्रवृत्ति के हों तो व्यक्ति के बिगड़ने में देर नहीं लगती; विशेषकर अगर सभी लोग शराबी हों तो। व्यक्ति को वे शराब के एक से बढ़कर एक गुण और फ़ायदे गिनाते हैं और हर पीने के दौर में उसे भी शराब पेश करके शराब पीने को उकसाते हैं। यदि व्यक्ति सिद्धान्तवादी, सुसंकल्प और सुहृदय नहीं है तो वह सहज ही उनकी बातों में आ जाता है और 'संगत फल देखिए तत्काला' को चरितार्थ करता हुआ, उनमें शामिल हो जाता है। फिर एक बार पिया, तो आगे पीता चला जाता है और शराब का आदी होकर रह जाता है।

5. समाज में चलन : बहुत-से समाज में शराब का पीना कोई ऐब नहीं

माना जाता, बल्कि कई समाज में विशेषकर किसी उत्सव या त्योहार के अवसर पर शराब का पीना गर्व और सुसंस्कृत होने की बात मानी जाती है। जब व्यक्ति ऐसे लोगों के बीच किसी प्रोग्राम या उत्सव में शामिल होता है और देखता है कि हर व्यक्ति शराब पी रहा है और शराब पीकर झूम रहा है, तो वह उनके मध्य शराब का इनकार करना अपनी आत्महीनता और अपने को असभ्य होना महसूस करता है। अतः जब शराब परोसनेवाला उसके सामने शराब पेश करता है, तो न चाहते हुए भी वह शराब की बोतल या गिलास उठा लेता है और शराब पी जाता है। फिर जब एक बार व्यक्ति एक प्रोग्राम या संगति में शराब पी जाता है तो हर प्रोग्राम और संगति में शराब पीने लगता है। बाद में प्रायः लोग फिर शराब के आदी हो जाते हैं।

6. मूड बनाने के लिए : कभी-कभी कोई व्यक्ति अचानक किसी चिंता या अवसाद में घिर जाता है, फिर उसका किसी कार्य में दिल नहीं लगता और न ही कोई कार्य करने में उसे मज़ा आता है। हर कार्य के करने में उसे फीकापन होने का एहसास होता है। वह हर समय बेचैन और उदास रहने लगता है। ऐसी स्थिति में अगर कोई कार्य करना हो तो व्यक्ति नशे का सहारा लेता है।

7. यह सोच कि शराब पीने से स्वास्थ्य बनता है : बहुत-से लोगों की यह सोच होती है कि अगर शराब पी जाए तो वे अधिक तंदुरुस्त और अधिक स्वस्थ रहेंगे। कुछ लोग इसी भ्रम में आकर पहले थोड़ी मात्रा में शराब पीना शुरू करते हैं, बाद में इसी पर जीने लगते हैं।

8. शराब का सहजता से उपलब्ध हो जाना : हमारे देश में जहाँ दूध, पानी और जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुओं का मिल पाना दूभर होता जा रहा है, वहीं शराब का मिलना बहुत आसान है। इस ज़हर को दुर्लभ और मुश्किल से मिल पाने की वस्तु बनाए जाने के स्थान पर इसे सहज ही उपलब्ध हो जानेवाली वस्तु बनाने में सरकारें लगी हुई हैं। जगह-जगह शराब के शॉप और दुकानें खोली जा रही हैं। इंडिया टुडे (23 मार्च 2021) के अनुसार मात्र दिल्ली में शराब की दुकानें जो सरकारी मान्यता प्राप्त हैं, उनकी संख्या 850 है और जो ग़ैर-मान्यता प्राप्त हैं और जिनका संचालन

माफ़िया करते हैं उनकी संख्या दिल्ली में लगभग 2000 से भी अधिक बताई जाती है। यह दशा मात्र एक शहर दिल्ली की है। इससे पूरे देश का अनुमान लगाया जा सकता है।

9. शराब का सस्ता होना : शराब के अधिक सेवन का एक कारण शराब के कुछ ब्राण्डों का कुछ स्थानों पर बहुत सस्ता होना है। योगेश प्रताप चौहान बागपत 'दारू सस्ती, महंगी भूख' शीर्षक से अपने एक लेख में लिखते हैं—

> "होटल पर एक वक्त का खाना कम से कम 40 रुपए में मिलता है। एक टिफिन खाने की कीमत 30 रुपए से कम नहीं है। ये दरें सबसे सस्ते खाने की हैं। पर एक वक़्त की देसी शराब (यानी क्वार्टर) सिर्फ़ 12 रुपए में मिल जाती है। हरियाणा में बिकने वाली अंग्रेज़ी बेस्टो ब्रांड शराब का हाफ 25 रुपए में और क्वार्टर मात्र 15 रुपए में उपलब्ध है। यानी एक टाइम के खाने के मुक़ाबले शराब की कीमत 15 से 28 रुपए कम है।"[1]

सन् 2015-16 के वित्त वर्ष में मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल की अध्यक्षता में कैबिनेट मीटिंग हुई और एक्साइज पॉलसी को स्वीकार किया गया, जिसके तहत देसी शराब की क़ीमत 20 रुपए और कम कर दी गई।

यद्यपि आज भी शराब के बहुत-से ब्राण्ड लाखों और करोड़ों में बिकते हैं। दुनिया की सबसे महंगी शराब बिलिनेयर वोदका है, जो रूसी विधि से तैयार की गई है। इसकी एक बोतल की कीमत 24 करोड़ रुपए है।[2] दूसरे स्थान पर सबसे महँगी शराब (रेड वाइन में) स्क्रीमिंग ईगल कार्बनेट है। इसकी नीलामी 3.2 करोड़ रुपए में हुई।

10. व्यक्ति या समाज की शराब के प्रति मिथ्या धारणाएँ : शराब के पीने में कुछ समाज व सम्प्रदायों की यह मिथ्या धारणा भी कारण बनती है, जिनकी यह सोच होती है कि शराब ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक पेय है। अतः

---

1. जागरण, 19 जून 2012
2. दे॰ हिन्द न्यूज़, 05 नवम्बर, सन् 2019

इसके पीने में वे किसी भी प्रकार की कोई अनिष्टता नहीं मानते, बल्कि वे इसे ईश्वर का प्रसाद मानते हैं और शराब से परहेज़ करनेवालों को ही अनिष्ट मानते हैं। अतः वे विभिन्न धार्मिक उत्सवों एवं अवसरों पर बेझिझक शराब पीते हैं और पिलाते हैं। इसी कारण इनके बीच विशेषतः उत्सव एवं पर्वों के अवसर पर लड़ाई-झगड़े और अश्लील हरकतें सामान्य रूप से देखी जा सकती हैं। इस मिथ्या धारणा के कारण कुछ लोग स्वच्छन्द रूप से मद्यपान करते हैं और सदैव शराब के नशे में रहे आते हैं। ऐसे लोगों का मद्यपान (शराब पीने) के कारण जीवन विनष्टप्राय होकर रह जाता है।

इसी प्रकार कुछ ऐसे भी लोग हैं जो मद्यपान को पुरुषत्व का प्रतीक मानते हैं और जो शराब नहीं पीते वे उन्हें पौरुषहीन समझते हैं। इस प्रकार के लोग दूसरों को तरह-तरह के तर्क देकर शराबी बना देते हैं। इसी तरह कुछ लोग 'बीयर' को शराब न मानकर जौ का आसवित जल मानते हैं और उसे हानिकारक न मानकर पीना शुरू करते हैं, बाद में वे ही धीरे-धीरे इसके अभ्यस्त हो जाते हैं और उससे भी अधिक स्ट्रांग की माँग करने लगते हैं। परिणामतः वे अन्य ब्राण्ड की स्ट्रांग शराब पीने लगते हैं और शराबी होकर रह जाते हैं। उन्हें फिर बिना शराब पिए नींद ही नहीं आती।

11. शराब के प्रति माता-पिता व दादा-दादी की कुधारणा : कुछ माता-पिता व दादा-दादी का यह मानना होता है कि यदि बालक को नज़ला-जुकाम या बीमार होने पर शराब की थोड़ी मात्रा दे दी जाए तो शिशु की बीमारी और बेचैनी दूर हो जाएगी। अतः ब्रॉण्डी की थोड़ी मात्रा बालक को दे दी जाती है और इससे बालक शान्त हो जाता है। वस्तुतः बालक पर शराब का नशा हो जाता है और वह सो जाता है और लोग समझते हैं कि बालक की तबियत ठीक हो रही है। जब शराब का असर कम हो जाता है तो बालक पुनः उसी तरह बेचैन हो जाता है, तो शराब पुनः दे दी जाती है। यह सत्य है कि बालक जब बीमार हो जाता है तो बालक के परिजन उसे किसी भी तरह ठीक करना चाहते हैं; किन्तु यह भी सत्य है कि सामयिक रूप से बच्चे को ठीक करने के लिए उसके जीवन से नहीं खेलना चाहिए। बालक के हर अंग शैशव अवस्था में अत्यन्त नाजुक और संवेदनशील होते हैं। जब

बालक को शराब दी जाती है तो उसके उन नाज़ुक अंगों पर शराब का—बड़ों की तरह—बड़ा दुष्प्रभाव पड़ता है और कभी-कभी उनसे भी अधिक गम्भीर। बचपन से ही थोड़ी मात्रा में शराब पिलाते रहने से जब बालक धीरे-धीरे बड़ा होता जाता है तो उसके बड़ा होने के साथ-साथ उसके शराब की मात्रा भी कभी-कभी सहज ही बढ़ जाती है और वह एक बड़ा शराबी होकर रह जाता है।

12. माता-पिता की लापरवाही और आपसी विवाद : बहुत से माता-पिता अपनी निजी समस्याओं के चलते अपने बच्चों पर कम ध्यान दे पाते हैं। बच्चा किन बच्चों के साथ रहता है, कहाँ जाता है, कब आता है और कब-कहाँ रहता है? इन बातों पर ध्यान नहीं देते, बल्कि वे अपनी निजी समस्याओं में ही उलझे रहते हैं। कुछ दम्पत्ति आपस के लड़ाई-झगड़ों और केस-अदालतों में उलझे रहते हैं, तो कुछ अपनी आर्थिक समस्या व सामाजिक उलझनों को दूर करने में लगे रहते हैं। वे इस ओर नहीं ध्यान दे पाते कि उनके बालक किन मानसिक परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं। ऐसे बच्चे प्रायः कुसंगति में पड़ जाते हैं और तरह-तरह का नशा करने लगते हैं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो इनका अन्य नशा के अलावा मुख्य नशा शराब हो जाता है। बच्चों की इस दुर्दशा का उत्तरदायित्व माता-पिता पर ही आता है। कुछ दाम्पत्य अलगाव व तलाक़ लेकर अलग-अलग रहने लगते हैं। ऐसी परिस्थिति में भी प्रायः बालक समुचित प्यार के अभाव में होश संभालते ही कुपथ में चलने लगते हैं और शराब के आदी हो जाते हैं। बेसहारा और ग़रीब बच्चों को अपराध-माफिया भी सहज ही अपने पकड़ में लेकर और तरह-तरह का नशा देकर उनसे अनेकों प्रकार के अपराध करवाते हैं।

शराब पीने के उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त और भी कई कारण हो सकते हैं। जैसे परिवार या घर के किसी व्यक्ति द्वारा स्वच्छंदतः शराब पीता हुआ देखना और उससे प्रभावित होना। इलाक़े या क्षेत्र का पर्यावरणीय कारकों का होना यथा ठण्ड एवं दूरस्थ जंगली पर्यावरण आदि। इसी प्रकार शराब का सहज व आसानी से मिल जाना, शराब की दुकान की निकटस्थता इत्यादि का होना। कुछ वैज्ञानिकों ने शोध के पश्चात् यह भी बताया है कि

जब कोई व्यक्ति लगातार शराब पीने लगता है, तो व्यक्ति के मस्तिष्क में पैदा होनेवाले रसायनों की निर्भरता शराब पर होने लगती है, यानी मस्तिष्क रासायनिक क्रिया या हार्मोन का स्राव करता ही नहीं, जब तक कि व्यक्ति शराब न पी ले और जब मस्तिष्क यह माँग करने लगता है तो व्यक्ति बेचैन हो जाता है कि एक घूँट ही सही, लेकिन शराब उसे मिल जाए और व्यक्ति इस प्रकार शराब पर निर्भर रहने लगता है। अतः यह सर्व सत्य है कि शराब स्वास्थ्य के लिए लाभ की तुलना में अधिक हानिकारक है; चाहे वह कम मात्रा में पी जाए या अधिक मात्रा में।

शराब के दुष्प्रभाव एवं नुक़सान

चिकित्सा के विशेषज्ञों का कहना है कि शराब का इस्तेमाल 200 से अधिक बीमारियों या स्वास्थ्य के नुक़सानदेह परिस्थितियों का कारण बन सकता है, जिनमें लीवर और कैंसर के कई प्रकार शामिल हैं। शराब पीने के बड़े ही दुष्प्रभाव होते हैं। शराब का पीना जीवन के हर क्षेत्र में अपना बुरा प्रभाव छोड़ता है—चाहे वह आर्थिक हो, शारीरिक हो या सामाजिक। यह और बात है कि यह दुष्प्रभाव और इसके नुक़सान किसी में किसी दृष्टिकोण से तो किसी में किसी दृष्टिकोण से अधिक दिखाई देते हैं और किसी-किसी में सभी दृष्टिकोणों से सभी दुष्प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। आइए कुछ दुष्प्रभावों को देखते हैं—

1. शारीरिक दुष्प्रभाव एवं नुक़सान

शराब पीने का सबसे ज़्यादा और सबसे व्यापक दुष्प्रभाव एवं नुक़सान शारीरिक होता है। शराब चाहे कम पी जाए या अधिक, इसका शरीर पर अवश्यतः कुछ-न-कुछ दुष्प्रभाव पड़ता है। शराब पीने से जिन शारीरिक अंगों पर सबसे अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है, वे अंग—लीवर, पाचन-तंत्र, नेत्र, स्नायु-तंत्र, हृदय इत्यादि हैं तथा यौन और रोग प्रतिरोधक शक्ति (Immunity Power) भी बुरी तरह प्रभावित होती हैं। इन तथ्यों का और अधिक विस्तार से अवलोकन करते हैं—

लीवर और लीवर पर शराब पीने का दुष्प्रभाव

लीवर जिसे हम यकृत, जिगर या कलेजा के नाम से भी जानते हैं, हमारे शरीर का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग होता है। यह हमारे पेट के दाईं ओर स्थित होता है। लीवर (Liver) का भोजन की पाचनक्रिया में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह हमारे शरीर में लगभग 300 से अधिक कार्य करता है,

उनमें से इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य पित्त (Bile) का उत्पादन है। पित्त एक तरल पदार्थ होता है जो पित्ताशय (Gall Bladder) में जमा रहता है। यह वसा और विटामिनों के अवशोषण तथा पाचन-क्रिया के लिए कार्य करता है। लीवर कार्बोहाइड्रेट्स (Carbohydrates) को ग्लाइकोजन (शरीर के लिए ईंधन) के रूप में जमा करके रखता है और जब आवश्यकता होती है तो तुरन्त इसे ग्लूकोज के रूप में स्रावित (Release) कर देता है। लीवर का एक मुख्य कार्य नुक़सानदायक पदार्थों एवं विषाक्त रसायनों को अलग करना यानी विषहरण (Detoxification) और प्रोटीन का पैदा करना भी है। इसकी इस क्रिया से हमारा शरीर संक्रमण और रक्त-स्राव से सुरक्षित होता है। स्वस्थ लीवर एक रासायनिक प्रयोगशाला की तरह कार्य करता है। हमारे शरीर के विकास में जो सहायक रस व पदार्थ होते हैं उनमें से कुछ प्रमुख पदार्थों का निर्माण यही करता है। यथा—ग्लूकोज का निर्माण : इससे हमारे शरीर को शक्ति और ऊर्जा मिलती है। प्रोटीन का निर्माण : यह हमारे शरीर के सम्पूर्ण अंगों के विकास और सुरक्षा में सहायक होता है। रक्त का निर्माण भी लीवर की ही सहायता से होता है।

शराब का सबसे अधिक दुष्प्रभाव लीवर पर ही पड़ता है। शराब का लीवर पर जब दुष्प्रभाव पड़ना शुरू होता है, तो प्रथमतः लीवर अपने स्वाभाविक आकार से अधिक बढ़ना शुरू करता है। अगर व्यक्ति शराब से परहेज़ करने लगता है तो यह बढ़ा हुआ लीवर ठीक हो जाता है, लेकिन जब व्यक्ति शराब का पीना नहीं छोड़ता तो फिर आकार बढ़ने के साथ-साथ यह अपना कार्य करना भी बन्द करने लगता है और इसके चारों ओर फैट जमा होने लगता है। फैट जमा होने के साथ ही लीवर के कार्य करने वाले सेल्स मरने लगते हैं और लीवर अपनी निष्क्रियता की ओर बढ़ जाता है। व्यक्ति की दाहिनी ओर, जहाँ लीवर होता है, वहाँ पर दर्द, बेचैनी होने लगती है। कुछ शराबियों को बुख़ार और पीलिया हो जाता है। इसे मेडिकल की भाषा में अल्कोहलिक हैपेटाइटिस (Alcoholic Hepatitis) कहा जाता है। व्यक्ति अगर लीवर की तकलीफ़ महसूस करते ही शराब बिल्कुल छोड़ देता है और चिकित्सक के सम्पर्क में रहकर समुचित दवा लेता है, तो इस अवस्था में

उसके ठीक होने की सम्भावना शेष रहती है। लेकिन अगर व्यक्ति शराब पीने से बाज न आया तो फिर तीसरी अवस्था अल्कोहलिक सिरोसिस (Alcohlic cirrhosis) की शुरुआत हो जाती है और व्यक्ति के ठीक होने की सम्भावना लगभग ख़त्म होने लगती है। इस अवस्था में पीलिया (Jaundice) होने के साथ-साथ स्पष्ट शारीरिक लक्षणों में से एक यह होता है कि पैरों में सूजन आ जाती है। इसके मरीज़ को ख़ून की उलटी हो सकती है और कभी-कभी बेहोश होने लगता है। हिन्दी फिल्म के सुप्रसिद्ध गायक शंकर जय किशन जो 'एस॰जे॰' के नाम से जाने जाते हैं, उनकी इसी मर्ज़ से पीड़ित होकर मृत्यु हुई थी, क्योंकि वे शराब बहुत पीते थे।[1] लन्दन (यू॰के॰) के सुप्रसिद्ध फुटबाल प्लेयर जार्ज बेस्ट की मृत्यु 25 नवम्बर 2005 ई॰ में इसी रोग से हुई थी, वे भी शराब का बहुत अधिक सेवन करते थे।[2] जूलिया ब्रूंस, जो न्यूयार्क सिटी में रहती थीं और सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और मॉडल थीं, मात्र 32 वर्ष की उम्र में अपनी जीवन-लीला समाप्त कर लीं, क्योंकि ये भी बहुत अधिक शराब पीती थीं और इनको अल्कोहलिक पॉइजनिंग (Alcoholic Poisoning) हो गया था।[3]

पाचन तंत्र (Digestive System) पर दुष्प्रभाव

भोजन के जटिल पोषक पदार्थों व बड़े अणुओं को विभिन्न रासायनिक क्रियाओं और एंजाइम की मदद से सरल, छोटे और घुलनशील अणुओं में बदलने को पाचन-क्रिया कहा जाता है और जो तंत्र यह कार्य करता है वह पाचन-तंत्र कहलाता है। इस तंत्र में जो शारीरिक अंग कार्यरत होते हैं वे ये हैं—मुख, गुहा, ग्रसनी, ग्रासनाल, अमाशय, छोटी आँत, बड़ी आँत, मलद्वार, लार ग्रंथि, यकृत ग्रंथि और अग्नाशय। शराब पीने से पाचन-तंत्र के ये सभी अंग प्रभावित होते हैं। इनमें से सबसे अधिक प्रभावित अग्नाशय, अमाशय, और यकृत् ग्रंथि होती है। इनके ख़राब हो जाने पर व्यक्ति कई गंभीर बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। अधिकतर शराबियों की मौतें इन्हीं अंगों के ख़राब होने के कारण होती हैं।

1. Filmfare.com. Retrieved, 18-06-2016
2. B.B.C. News, 25 Nov. 2005
3. New York Times, 25 Dec. 1927

आँखों पर दुष्प्रभाव

विटामीन बी-1 (Vitamin B_1) आँखों की रौशनी बनाए रखने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व होता है। इसका वैज्ञानिक नाम थायमिन हाइड्रोक्लोराइड (Thiamine Hydrochloride) है। वयस्कों को इसकी प्रतिदिन एक मिलीग्राम और गर्भवती स्त्रियों को सम्पूर्ण काल में 5 मिलीग्राम की आवश्यकता होती है। शराब के लगातार पीने से इस विटामिन की कमी होने लगती है और बेरीबेरी (Beriberi) की बीमारी पकड़ लेती है। इस बीमारी में पूरा शरीर सहित आँखों की मांसपेशियाँ कमज़ोर हो जाती हैं, जिस कारण व्यक्ति की आँख की रौशनी कम होती चली जाती है और कभी-कभी अन्धापन भी आ सकता है।

स्नायुतंत्र (Nerve Fibers) पर दुष्प्रभाव

वैसे तो शराब का प्रभाव शरीर के सभी अंगों पर पड़ता है, लेकिन स्नायुतंत्र तुरन्त प्रभावित हो जाता है। इसी कारण कुछ व्यक्तियों के शराब पीने के तुरन्त बाद उनमें सोचने-समझने और खड़ा तक होने की समर्थता ख़त्म होने लगती है। कुछ लोगों की स्थिति पागलपन की-सी हो जाती है। लगातार और लम्बे समय तक शराब पीने से मतिभ्रम (Dementia) की बीमारी पकड़ लेने की अधिक सम्भावना बढ़ जाती है, इसमें दिमाग़ की बहुत-सी नसें मरने लगती हैं। प्रमुखतः स्नायु-तंत्र के कमज़ोर हो जाने के कारण ही पक्षाघात (Paralysis) की समस्या सामने आती है। यद्यपि पक्षाघात के अन्य कारण भी हो सकते हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता पर दुष्प्रभाव (Side Effects on Immunity)

रोग प्रतिरोधक शक्ति को चिकित्सीय भाषा में 'इम्यूनिटि पावर' या 'इम्यून सिस्टम' कहते हैं। यही वह सिस्टम है जो हमारे शरीर को हर तरह की बीमारियों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। जिसका यह सिस्टम जितना अधिक मज़बूत होता है वह उतना अधिक स्वस्थ और रोगमुक्त होता और जिसका जितना अधिक कम होता है, वह उतना ही अधिक रोगों (Diseases) का शिकार होता है। शराब हमारे इस सिस्टम या क्षमता को

बहुत तेज़ी से दुष्प्रभावित करती है। इसी कारण प्रायः शराबी कई बीमारियों के शिकार देखे जाते हैं। कई लोग इसी क्षमता की कमी के कारण कैंसर और क्षय रोग (टी०बी०) जैसी जानलेवा बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। कभी-कभी पक्षाघात (Paralysis) का कारण भी यही होता है।

यौन एवं प्रजनन तंत्र पर दुष्प्रभाव (Side Effects on Sex System)

शराब का यौनेन्द्रिय पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि शराब स्नायुतंत्र को प्रभावित करती है। इससे शरीर की बहुत-सी नसें मरने लगती हैं, जबकि पुरुष-यौनेन्द्रिय का स्नायुतंत्र से सीधे सम्बन्ध होता है, इसी कारण शराब पीनेवालों में नपुंसकता अधिक तेज़ी से आने की अधिक सम्भावना होती है। प्रायः शराब पीनेवालों की प्रतिरोधक क्षमता भी कमज़ोर होती रहती है, इसी कारण इनके यौन-व्यवहार में उनको रिस्क लेने की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है और अन्य संक्रमित बीमारियाँ होने का ख़तरा भी इनमें अधिक बढ़ जाता है।

शराब पुरुष के स्पर्म को भी प्रभावित करती है, यह एक हाल ही में किए गए शोध से सिद्ध हो चुका है। यह शोध सन् 2008 से 2012 के मध्य 18 से 28 वर्ष के 1200 डेनिश पुरुषों पर किया गया है। शोध के दौरान इन पुरुषों का मेडिकल परीक्षण किया गया। पुरुषों से उनके मद्यपान करने की आदत से सम्बन्धित प्रश्न किए गए। साथ ही उनके स्पर्म और ब्लड सैंपल भी लिए गए। इस शोध से यह बात सामने आई कि जो लोग शराब का अधिक सेवन करते हैं, उनके स्पर्म की गुणवत्ता (Quality) अच्छी नहीं है और उनका स्पर्म-काउंट भी कम हो गया है। इसके साथ ही यह भी मिला कि जो पुरुष बहुत अधिक शराब पीते हैं, उनके गुप्तांगों का आकार और साइज भी असामान्य हैं। यह प्रभाव प्रति सप्ताह 7.5 यूनिट अल्कोहल लेने के बाद स्पष्ट हुआ।[1]

1. दे० पत्रिका, 25 मार्च, 2016 ई० शीर्षक "पुरुष जान लें शराब से जुड़ी ये बातें, नहीं तो होना पड़ेगा शर्मिन्दा" ले० विकास गुप्ता

पुरुषों में कामेच्छा और काम-शक्ति (Sex Power) की निर्भरता टेस्टोस्टेरॉन नामक हार्मोन पर होती है। इसी लिएं इसे सेक्स हॉर्मोन और पुरुषों का सेक्स ड्राइव भी कहा जाता है। एक स्वस्थ एवं सामान्य पुरुष में इसका स्तर (Range) 300 से 1000 नैनो ग्राम प्रति डेसी लीटर होता है। जब इस हॉर्मोन का स्तर 300 से कम हो जाता है तो पुरुष में इलेक्टाइल डिस्फंक्शन (नपुंसकता) एवं शीघ्रपतन की समस्या आ जाती है। शोधों से ज्ञात हुआ है कि धूम्रपान और मद्यपान करने से इसका स्तर बहुत तेज़ी से गिरता है। इंदिरा आई॰वी॰एफ़॰ (फर्टीलिटी एंड आई॰वी॰एफ़॰ सेन्टर) अपनी साइट पर लिखा है—

> "शराब के अधिक सेवन और धूम्रपान से टेस्टोस्टेरॉन का स्तर कम हो सकता है। टेस्टोस्टेरॉन पुरुष-प्रजनन प्रक्रिया के लगभग सभी घटकों में सीधे शामिल होता है और टेस्टोस्टेरॉन में कमी कई क्लीनिकल समस्याओं से जुड़ी होती है, जिसमें कम प्रजनन क्षमता, वीर्य की मात्रा में कमी, नपुंसकता और इरेक्शन प्राप्त करने में असमर्थता शामिल है।"[1]

अतः यदि कोई बेहतर सेक्स लाईफ़ बिताना चाहता है तो भी शराब से दूर रहना होगा।

हृदय पर दुष्प्रभाव

शराब अधिक मात्रा में पीने के कारण हमारे शरीर में ट्राइग्लिसराइड्स (Triglycerides) का स्तर बढ़ता जाता है, जिससे दिल की मांसपेशियाँ कमज़ोर, मोटी और सख़्त होने लगती हैं, इसे कार्डियोमायोपैथी के रूप में जाना जाता है। इसके कारण हृदय ठीक एवं सहज रूप से पंप नहीं कर पाता और परिणामतः हार्ट-अटैक और उच्च रक्तचाप होने की अधिक संभावना बढ़ जाती है। इसी प्रकार अत्यधिक शराब का सेवन हृदय रोग एट्रियल फाइब्रिलेशन (Altrial Fibrillation) एवं अनियमित हृदय गति के विकसित होने का कारण भी बन सकता है।

---

1. indiraivf.com शीर्षक "क्या शराब और धूम्रपान पुरुषों की प्रजनन क्षमता और सेक्स लाईफ़ प्रभावित करते हैं?"

2. आर्थिक एवं सामाजिक दुष्प्रभाव
(Economic and Social Side Effects)

उपरोक्त शरीरांगों के अतिरिक्त जीवन के अन्य क्षेत्रों पर भी शराब का अत्यन्त घातक दुष्प्रभाव पड़ता है। क्योंकि शराब के कारण मस्तिष्क की कोशिकाएँ और मानसिक तंत्र कमज़ोर पड़ते जाते हैं, जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार बदलता जाता है। वह चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव का हो जाता है। वह बात-बात पर लड़ाई-झगड़ा करनेवाला हो जाता है। विशेषकर उस वक़्त जब वह शराब पिए हुए होता है, उस समय उसकी सूझ-बूझ ख़त्म हो जाती है। यही कारण है कि प्रायः गम्भीर अपराधों में पकड़े जानेवाले अपराधी अधिकतर शराब के आदी होते हैं। वे प्रायः शराब की हालत में ही कोई अपराध कर गुज़रते हैं और नशा उतरने के बाद पश्चाताप करते रहते हैं। इसी प्रकार प्रायः शराब पीनेवालों का सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन क्लेश और लड़ाई-झगड़ों से भरा हुआ होता है। मध्यम वर्ग से नीचे के शराबियों का आर्थिक जीवन अत्यन्त तबाह होकर रह जाता है। क्योंकि जो कुछ वे कमाते हैं उसका अधिक भाग शराब ख़रीदने और शराब के साथ खानेवाली चीज़ों में ही व्यय कर देते हैं। वे जीवन की आवश्यक चीज़ें भी जुटा पाने में असमर्थ होते हैं। उनके बाल-बच्चे जीवन की मूलभूत आवश्यक वस्तु भी न मिल पाने के कारण बिलकुल तबाह होकर रह जाते हैं।

इसी प्रकार शराब पीनेवाला अनेक बीमारियों में ग्रस्त हो जाता है और बीमारियों की पीड़ा से उत्पीड़ित रहता है। फलस्वरूप वह न कोई आय कर सकता है और न कोई व्यवसाय। यदि शराब पीनेवाला ग़रीब हो और वही घर का मुखिया हो और परिजनों में से कोई इस योग्य न हो कि वह किसी आय की व्यवस्था कर सके, तो उस शराबी के परिवार की तबाही देखते बनती है। परिवार अत्यन्त दयनीय दशा में जीता है। यदि परिवार बहुत अधिक ग़रीब न हो अर्थात् मध्यम वर्ग का हो, तब भी परिवार की ख़ुशहाली छिन जाती है। कारण यह कि जब वह विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो जाता है, तो घर की आय का एक बड़ा हिस्सा उस शराबी के इलाज में ही जाता रहता है। इसी प्रकार कभी-कभी शराब के नशे में आकर बहुत से शराबी ऐसे

अपराध कर बैठते हैं कि उनका जीवन जेल में और परिजनों का जीवन अदालतों का चक्कर काटने में ही गुज़र जाता है। शराब मनुष्य को किस तरह हर दृष्टि से तबाह करती है इस सन्दर्भ में एक आख्यान याद आता है, जिसे किसी विद्वान ने सुनाया था। संक्षेप में आख्यान यह है कि किसी क़स्बे या शहर में एक सुसंपन्न परिवार रहता था। एक दिन शैतान मर्दूद ने साधु का भेष धारण करके उसके पास आया और उससे बोला कि तेरी मृत्यु बहुत निकट है। उसने पूछा कि इससे कैसे बचा जा सकता है तो उस साधु ने कहा कि तीन उपाय हैं—

एक यह कि तू अपने पुत्र की हत्या कर दे, दूसरा यह कि अपनी पत्नी का कत्ल कर दे या तीसरा यह कि तू शराब जी भर के पी ले। उसने सोचा कि अपने बेटे का या पत्नी का अपने जीवन के लिए कभी क़त्ल नहीं कर सकता। उस व्यक्ति ने बहुत विचार करने के बाद निर्णय लिया कि वह शराब पी लेगा। अतः उसने शराब पी ली। शराब उसे टेस्टी लगी तो पीता ही गया। नशा उस पर हावी हो गया। पत्नी ने जब उसे नशे की दशा में देखा तो उसने उससे कुछ बोला। उसकी आवाज़ सुनते ही वह पत्नी के साथ गाली-गलौज करने लगा। जब पत्नी ने कुछ और कहा तो वह उस पर हमला कर दिया, यहाँ तक कि उसका गला दबाकर उसे मार डाला। यह सब देखकर जब उसका लड़का उसके करीब आया और कुछ बोला तो वह बेटे को भी किसी तेज़ हथियार से मार दिया। यह ख़बर जब मुहल्ले में फैली तो पुलिस को सूचना दी गई और वह हत्या के केस में दण्डित किया गया। इस प्रकार वह हँसता-खेलता परिवार तबाह व बरबाद होकर रह गया। यह तबाही उसकी शारीरिक भी थी और आर्थिक व सामाजिक भी। इसके अतिरिक्त उसके कुल-परिवार पर सदैव के लिए यह कलंक भी लग गया कि उसमें शराब भी पी जाती है और हत्या भी होती है। अतः शराब ने उसे पूरी तरह तबाह करके रख दी।

इसी प्रकार की एक सच्ची आत्मकथा बी॰बी॰सी॰[1] में प्रकाशित हुई थी,

---

1. बी॰बी॰सी॰ हिन्दी डॉट कॉम, सोम॰ 22 अगस्त, 2016

जिसका शीर्षक था "शराब से बर्बाद हुए एक शराबी की आत्मकथा"। इसके लेखक वरिष्ठ पत्रकार 'शिवम् विज़' हैं। इन्होंने उस व्यक्ति का नाम छिपाते हुए उसके मुख से उसकी आत्मकथा लिखी, जिसका सारांश रूप यह कि–

> वह व्यक्ति सन् 1988 ई॰ में जब कालेज में था, तब उसने शराब की पहली घूँट पी थी। उसके बाद वह लगातार शराब पीता रहा। सन् 1994 ई॰ तक वह शराब का आदी बन गया। वह सन् 1970 ई॰ में पटना में पैदा हुआ, लेकिन पढ़ाई कहीं और से की। पढ़ाई करने के बाद उसको दूसरे राज्य में एक अच्छी सरकारी नौकरी मिल गई और उसकी शादी भी हो गई। नौकरी के बाद से ही वह और अधिक शराब पीने लगा और शराब का ऐसा आदी हुआ कि शराब ने उसका सब कुछ तबाह व बरबाद करके रख दिया। वर्ष सन् 2011 ई॰ में उसकी पत्नी ने उसके द्वारा शराब पीकर किए गए उपद्रवों से परेशान होकर उससे तलाक़ ले ली और सन् 2012 ई॰ में उसकी नौकरी भी जाती रही। उसके बाद वह पटना वापस लौट आया। इस तरह शराब उसकी तबाही का कारण बन गई।

शराब जीवन नहीं, मौत है

शराब के सम्बन्ध में की गई उपरोक्त वार्ता और शराब के दुष्प्रभावों से स्पष्ट हो गया कि शराब जीवन नहीं, मौत है। इस तथ्य की पुष्टि एवं स्पष्टीकरण विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की इस रिपोर्ट से भी होता है कि जिसमें कहा गया है कि कई प्रकार के कैंसर समेत 200 से अधिक स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारियाँ शराब से होती हैं। (डायचे वेले, प्रकाशित 19 सित॰ 2019) इससे स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति शराब पीता है, उसके जीवनहरण में कहीं न कहीं शराब अवश्य कारण होता है और इस प्रकार स्पष्ट कहा जा सकता है कि शराब जीवन नहीं, मौत है। इस सम्बन्ध में स्वास्थ्य संगठन की इस एक और रिपोर्ट को देखा जा सकता है जिसमें कहा गया है कि दुनिया भर में मरनेवालों की संख्या में मरनेवाला हर बीसवाँ

व्यक्ति वह होता है जो शराब का आदी या शराब के दुष्प्रभावों से ग्रस्त होता है।[1] संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वास्थ्य विभाग की ही एक और रिपोर्ट है, जिसके अनुसार वैश्विक स्तर पर प्रतिवर्ष 30 लाख से भी अधिक लोग शराब के कारण मर जाते हैं। यह संख्या एड्स, फ़साद और ट्रैफ़िक दुर्घटना से मरनेवाले लोगों की संख्या से भी अधिक है।

नवभारत टाइम्स (N.B.T.) में प्रकाशित एक सूचना के अनुसार वैश्विक स्तर पर प्रतिदिन 6 हज़ार लोगों की मौत का कारण शराब होती है। अप्रत्यक्ष रूप से शराब के कारण होनेवाली मौत की संख्या इसके अतिरिक्त है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख टेड्रोस ऐथानॉग गेब्रेयेसस ने अपने एक बयान में कहा कि 'बहुत से लोगों के लिए शराब के हानिकारक परिणामों का प्रभाव उनके परिजन और समाज के लोगों पर हिंसा, चोट, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, कैंसर और हृदयघात जैसी बीमारियों के रूप में पड़ता है।[2]

स्वयं भारत के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट कहती है कि प्रतिवर्ष लगभग दो लाख साठ हज़ार लोगों की शराब के कारण मौत हो जाती है। इसमें लीवर की समस्या, कैंसर, नशे की दशा में ड्राइविंग एक्सीडेंट जैसे कारण हैं।[3]

---

1. देखें : डायचे वेले (जर्मनी) उर्दू, 21 सितम्बर 2018, शीर्षक—साइंस और माहौल; एवं दे॰ urduvoa.com, 25 सितम्बर 2018
2. N.B.T. online updated 23 Sept. 2018
3. उपरोक्त

धर्म और धर्म-ग्रंथों की दृष्टि में शराब और नशा करना

प्रायः धर्मों का मूल उद्देश्य मानव को नैतिकता के उच्च स्तर पर ले जाना प्रमुख होता है। इसी कारण प्रत्येक धर्म-ग्रन्थों ने हर उस चीज़ को अवैध और हराम ठहराया है, जो भी मनुष्य को अनैतिकता की ओर ले जाती है। जैसे शराब, अश्लीलता, जुआ आदि। क्योंकि शराब हर बुराई की जननी (माँ) मानी जाती है। यह प्रायः शराबी को अनैतिकता, असामाजिकता और दुष्कर्म की ओर उभारती और उसके लिए दुस्साहस जुटाती है। इसी कारण इसे लगभग सभी धर्म अवैध ठहराते हैं और अगर कोई धर्म स्पष्ट शब्दों में इस पर प्रतिबन्ध नहीं लगाता और न हराम ठहराता है, तो इसके स्वच्छन्द रूप से इस्तेमाल की अनुमति भी नहीं देता। सभी धर्मों ने इसके सेवन को हर पहलू से नियंत्रित करने की कोशिशें की हैं और नियंत्रण भी ऐसा कि अगर नियंत्रित करने की शैली पर जब विचार किया जाता है, तो प्रतीत होता है कि वह धर्म शराब के सेवन को कदापि पसन्द नहीं करता, वरन शराब पीनेवाले को सख़्त सज़ा देना चाहता है। आएँ देखें—

हिन्दू धर्म-ग्रंथों का दृष्टिकोण शराब व नशे के सम्बन्ध में

विश्व के विभिन्न धर्मों में से एक धर्म सनातन धर्म है, जो आज भारतीय संस्कृति ग्रंथों में विद्यमान है, इसे वर्तमान में सामान्यतः हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता है। यह एक प्राचीन धर्म है। इस धर्म के धर्म-ग्रन्थ जहाँ सोम और सुरा नाम के मादक पेयों का दैत्य (राक्षस) व देवताओं के द्वारा सेवन किए जाने का उल्लेख करते हैं, वहीं शराब और मदिरा की सख़्त निन्दा भी करते हैं। मनुस्मृति शराब की निकृष्टता स्पष्ट करते हुए इसे (अर्थात् शराब को) पाप की संज्ञा देती है। कहती है—

सुरां वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते।। (मनु.11/93)

"सुरा (अर्थात् शराब) अन्न का मल है और मल को पाप कहते हैं।"

ऋग्वेद (7/86/6) में महर्षि वसिष्ठ ने वरुण देव से प्रार्थनाभरे शब्दों में कहते हैं कि—

न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः।

"हे वरुण! वह अपना निजबल पाप के लिए कारण नहीं होता। प्रगति में रुकावट होने से पाप में प्रवृत्ति होती है, मद्य (शराब), क्रोध, द्यूत, जुआ, अज्ञान अर्थात् चित्त लगाकर कार्य न करने की वृत्ति ये पाप में प्रवृत्त करनेवाली प्रवृत्तियाँ हैं।"

यानी पाप के कार्यों में प्रवृत्त करनेवाले कारणों में एक कारण मद्यपान यानी शराब का पीना है। ऋग्वेद में ही एक स्थान पर कहा गया है कि सुरा (शराब) पीने के बाद दुष्ट मस्त होकर परस्पर युद्ध करते हैं। (दे॰ ऋ॰ 8/2/12)। छान्दोग्योपनिषद् (5/10/9) और मनुस्मृति (11/54) में पाँच पापियों का उल्लेख किया गया है, उनमें से एक पापी 'शराब पीनेवाला' भी बताया गया है। शेष चार पापी—सोने का हरण करनेवाला, गुरु की स्त्री से गमन करनेवाला, ब्रह्मविद्या को जाननेवालों की हत्या करनेवाला और इन सबके साथ रहने और सहयोग करनेवाला बताया गया है। केकय के राजा अश्व-पति के राज्य की यह एक विशेषता थी कि उसके राज्य में कोई शराब पीनेवाला न था। (दे॰ छान्दो॰ 5/11/5) शराब का पीना इतना निन्दित एवं निकृष्ट है कि महर्षि याज्ञवल्क्य इसे महापातकी में से मानते और गणना करते हैं। (दे॰ याज्ञ॰ स्मृति 3/227), महर्षि आपस्तम्ब, महर्षि वसिष्ठ जी भी ऐसा ही मानते हैं। (दे॰ आ॰ध॰सू॰ 1/7/21/8; वसिष्ठ ध॰सू॰ 1/20)

मदिरा यानी शराब अपना कुप्रभाव मनुष्य पर किस प्रकार डालती है और एक अच्छे और साधारण व्यक्ति को क्या से क्या बना डालती है, इसका एक विस्तृत उल्लेख महाभारत के अनुशासन पर्व, अध्याय-145 में किया गया है। शशिभूषण श्री शिव जी पार्वती जी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं—

केचिद्धसन्ति तत् पीत्वा प्रवदन्ति तथा परे।
नृत्यन्ति मुदिताः केचिद् गायन्ति च शुभाशुभान्।।

कलिं ते कुर्वतेऽभीष्टं प्रहरन्ति परस्परम्।
क्वीचद् धावन्ति सहसा प्रस्खलन्ति पतन्ति च।।
अयुक्तं बहु भाषन्ते यत्र क्वचन शोभने।
नग्ना विक्षिप्य गात्राणि नष्टज्ञाना इवासते।।
एवं बहुविधान् भावान् कुर्वन्ति भ्रान्तचेतनाः।

"मदिरा (शराब) पीनेवाले उसे पीकर नशे में अट्टहास करते हैं, अंट-संट बातें करते हैं, कितने ही प्रसन्न होकर नाचते हैं और भले-बुरे गीत गाते हैं। वे आपस में इच्छानुसार कलह करते और एक-दूसरे को मारते-पीटते हैं। कभी सहसा दौड़ पड़ते हैं, कभी लड़खड़ाते हैं और गिरते हैं। शोभने! वहाँ जहाँ कहीं भी अनुचित बातें बकने लगते हैं और कभी नँग-धड़ँग होकर हाथ-पैर पटकते हुए अचेत से हो जाते हैं। इस प्रकार भ्रान्तचित्त होकर वे नाना प्रकार के भाव प्रकट करते हैं।"

धृतिं लज्जां च बुद्धिं च पानं पीतं प्रणाशयेत्।
तस्मान्नराः सम्भवन्ति निर्लज्जा निरपत्रपाः।।

"पी हुई मदिरा मनुष्य के धैर्य, लज्जा और बुद्धि को नष्ट कर देती है। इससे मनुष्य निर्लज्ज और बेहया हो जाते हैं।"

परिभूतो भवेल्लोके मद्यपो मित्रभेदकः।
सर्वकालमशुद्धश्च सर्वभक्षस्तथा भवेत्।।

"मदिरा पीनेवाला पुरुष जगत् में अपमानित होता है। मित्रों में फूट डालता है, सब कुछ खाता और हर समय अशुद्ध रहता है।"

विनष्टो ज्ञानविद्वद्भ्यः सततं कलिभावगः।
परुषं कटुकं घोरं वाक्यं वदति सर्वशः।।

"वह स्वयं हर प्रकार से नष्ट होकर विद्वान विवेकी पुरुषों से झगड़ा किया करता है। सर्वथा रुखा, कड़वा और भयंकर वचन बोलता रहता है।"

इसी प्रकार और कई दोषों एवं ख़राबियों का उल्लेख करने के बाद अन्ततः महाभारत में शराब पीनेवालों के लिए भगवान शिव जी फ़ैसला सुनाते हैं कि—

केवलं नरकं यान्ति नास्ति तत्र विचारणा।।

(अनुशासन पर्व अध्याय-145)

अर्थात् "वे (शराब पीनेवाले) केवल नरक में जाते हैं, इस विषय में कोई विचार करने की बात नहीं।"

उपरोक्त निर्णायक शब्दों से ज्ञात होता है कि महाभारत की दृष्टि में शराब पीना बिलकुल अप्रिय और हराम है।

मनु महाराज शराब से इतना अधिक परहेज़ करते हैं कि अगर शराब (मदिरा) के साथ कोई खाने-पीने (भोजन) की चीज़ लाई गई हो तो उसे भी न खाया जाए, अर्थात् मदिरा के साथ लाई गई वस्तुओं का सेवन करना मनु महाराज पाप मानते हैं।[1]

कूर्म पुराण (उत्तरा. 17/41-42) में विशेषकर ब्राह्मण को ताकीद करते हुए कहा गया है कि वह शराब कभी भी न पिए और न उसको कभी स्पर्श करे, और न शराब पीनेवाले से बोले।

शराब पीनेवाला कितना अधम और निकृष्ट होता है, इस सम्बन्ध में महाभारत के वचन हैं—

सुरापः सततं भर्त्यः सूकरत्वं व्रजेद् ध्रुवम्।।

(अनुशासन पर्व; अध्याय-145)

अर्थात् "सदा शराब पीनेवाला मनुष्य निश्चय ही सूअर होता है।"

यानी शराब पीनेवाला अत्यन्त गन्दा और बेहया जानवर सूअर की तरह होता है। अतः मनुष्य होने के नाते हमें शराब से हर हाल में परहेज़ करना चाहिए।

द्विजाति का व्यक्ति अगर किसी मोहवश शराब पी लेता है तो मनु महाराज उसका पश्चाताप यह बताते हैं कि—

सुरां पीत्वा द्विजो मोहादग्निवर्णां सुरां पिबेत्।

---

1. दे. : मनुस्मृति, अध्याय-11, श्लोक-70, अनुवाद : पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी, संस्करण : 6वाँ 2002

तया स काये निर्दग्धे मुच्यते किल्बिषात्ततः।।

(मनु॰ 11/90)

"मोह से ब्राह्मण यदि शराब पी ले तो इस पाप के नाश के लिए अग्निवर्ण के समान (अर्थात् आग की तरह जलती हुई गर्म) शराब पिए। क्योंकि जब उसमें उसका शरीर जलता है तब वह उस पाप से छूटता है।"

याज्ञवल्क्य महर्षि सभी के लिए शराब का पीना पाप मानते हैं और इस पाप के हो जाने पर इसके पश्चाताप का उपाय मनु महाराज की तरह ही सबके लिए यह बताते हैं। याज्ञवल्क्य महर्षि कहते हैं कि—

सुराम्बुघृतगोमूत्रपयसामग्निसन्निभम्।
सुरापोऽन्यतमं पीत्वा मरणाच्छुद्धिमृच्छति।।

(याज्ञ॰ 3/253)

"(मदिरा-सेवन महापातक का प्रायश्चित, अर्थात् इस पाप से निवृत्ति-शुद्धि का उपाय है—) मदिरा (शराब), जल, घृत, गोमूत्र और दुग्ध आदि में से एक को इतना अधिक गरम किया जाए कि वह खौलने लगे और सुरा (शराब) पीनेवाले द्वारा उस खौलते द्रव को पीकर प्राण-त्यागना।"

प्राचेतस महिर्ष के अनुसार सुरा (शराब) पीनेवाले को प्रायश्चित के रूप में लोहे अथवा ताम्बे के बर्तन में शराब को डालकर उसे इतना अधिक तपाना चाहिए कि बर्तन आग की तरह लाल हो जाए और उस उबलती हुई मदिरा को पीते-पीते वह प्राण त्याग दे। कहा गया—

लौहेन पात्रेण सुरापोऽग्निवर्णा सुरामायसेन पात्रेण ताम्रेण वा पिबेत्।[1]

इसी प्रकार महर्षि बृहस्पति कहते हैं कि शराब (सुरा) पीकर काम में प्रवृत्त होनेवाले के शरीर पर और मुख में उबलती-जलती शराब तब तक फेंकनी चाहिए, जब तक उसका प्राणान्त न हो जाए यानी जब तक मर न जाए। यही शराब के पीने का प्रायश्चित है। कहा—

1. याज्ञवल्क्यस्मृति, (अनु॰ डॉ॰ रामचन्द्र वर्मा शास्त्री) की टिप्पणी, पृ॰ 279-280 प्रका॰- डायनेमिक पब्लिकेशंस (इंडिया) लि॰, मेरठ।

सुरापाने कामकृते ज्वलन्तीं तां विनिक्षिपेत्।
मुखे तस्य विनिर्दग्धे मृतः शुद्धिमवाप्नुयात्।।[1]

शराब पीने के पाप से छुटकारे के उपरोक्त उपायों को देखकर स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय धर्मशास्त्र अर्थात् हिन्दू धर्म शराब पीने को कदापि पसन्द नहीं करता, बल्कि इसे लगभग अवैध और महापाप मानता है।

शराब से आत्यान्तिक परहेज़ यमस्मृति में मिलता है, जिसमें कहा गया है कि अगर कोई किसी के शराब पीनेवाले बर्तन में पानी पीता है तो वह पाप करता है। इसी प्रकार वसिष्ठ जी कहते हैं कि अगर किसी ने शराब की दुर्गंध सूँघ ली, तो उसे पाप लग गया। अब उसे इस पाप का पश्चाताप करना होगा।[2]

मदिरापान (शराब पीने) के सम्बन्ध में हिन्दू धर्म के उपरोक्त संक्षिप्त वर्णन से स्पष्टतः ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म मदिरापान की कदापि अनुमति नहीं देता। हिन्दू धर्म मदिरापान को नापसन्द और प्रतिबंधित ही नहीं करता प्रतीत होता, बल्कि वह इसे महापाप मानता है। अतः मद्यपान करना (शराब का पीना) जितना जल्द हो सके परित्याग कर देना चाहिए और धार्मिक लोगों को एकजुट होकर मद्यपान का विरोध करना चाहिए।

इस्लाम की दृष्टि में शराब और नशा

इस्लाम का मूल ग्रंथ क़ुरआन है। क़ुरआन में शराब के लिए शब्द 'ख़म्र' प्रयुक्त हुआ है। वस्तुतः अरबी में 'ख़म्र' हर उस चीज़ को कहा जाता है जिसके खाने या पीने से व्यक्ति को नशा आ जाता हो। अर्थात् क़ुरआन नशा लानेवाली वस्तु को ख़म्र कहता है और हर उस चीज़ को हराम ठहराता है जिसके खाने या पीने से व्यक्ति नशे में आ जाता हो। इस आदेश के अन्तर्गत शराब ही नहीं, बल्कि अफ़ीम, गांजा और वे गोलियाँ जिनके खाने के बाद व्यक्ति नशे में आ जाता है, हराम हैं। हदीसशास्त्रों में 'ख़म्र' का स्पष्टीकरण विस्तृत रूप में मिलता है। एक हदीस में है कि पैग़म्बर (सल्ल॰) ने कहा—

1. याज्ञवल्क्यस्मृति, (अनु॰ : डॉ॰ रामचन्द्र वर्मा शास्त्री), टिप्पणी, पृ॰ 280, प्रकाशक : डायनेमिक पब्लिकेशंस (इंडिया) लि॰, मेरठ।
2. उपरोक्त, पृ॰ 281

"हर नशा पैदा करनेवाली चीज़ ख़म्र है और हर नशा पैदा करनेवाली चीज़ हराम है।"

(हदीसशास्त्र : मुस्लिम-2003, इब्ने-हब्बान-5354)

"मैं नशा पैदा करनेवाली हर चीज़ से मना करता हूँ।"

(हदीसशास्त्र : तिरमिज़ी-1872, अबू-दाऊद-3677)

हज़रत उमर (रज़ि॰) ने जुमे के अभिभाषण (ख़ुत्बे) में 'ख़म्र' की यह पहचान बयान की—"ख़म्र से अभिप्राय हर वह वस्तु है जो बुद्धि को ढाँक ले।"

शराब और अन्य नशावर वस्तु को 'ख़म्र' इसी लिए कहा गया है कि इनके सेवन से मनुष्य की बुद्धि ढँक-सी जाती है और व्यक्ति होश में नहीं रहता। मानो वह व्यक्ति व्यक्ति ही नहीं रहता।

कौन-कौन-सी वस्तु ख़म्र होंगी और हराम होंगी, इस सम्बन्ध में इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने एक यह उसूल भी बयान किया—

"जिस चीज़ की अधिक मात्रा नशा पैदा करे, उसकी थोड़ी मात्रा भी हराम यानी अवैध है।" (अबू-दाऊद-3681)

हदीसशास्त्र अबू दाऊद में ही एक और स्थान पर पैग़म्बर (सल्ल॰) का फ़रमान है—

"जिस चीज़ का एक पूरा कराबा (बर्तन) नशा पैदा करता हो उसका एक चुल्लू पीना भी हराम है।"

क़ुरआन शराब के पीने को शैतानी काम ठहराते हुए कहता है कि इनसे सख़्ती के साथ परहेज़ करो।[1] कुछ लोग शराब को दवा समझकर इसको थोड़ी मात्रा में लेकर सोचते हैं कि यह शरीर के लिए फ़ायदेमन्द है, लेकिन सर्वजगत् के मालिक ने कहा कि इसमें कोई फ़ायदा नहीं, इसमें जो फ़ायदा तुम्हें नज़र आ रहा है, उसके मुक़ाबले में नुक़सान अधिक है।[2]

---

1. दे॰ क़ुरआन सूरा-5 माइदा, आयत-90
2. दे॰ क़ुरआन सूरा-2 बक़रा, आयत-219

एक व्यक्ति ने पैग़म्बर (सल्ल॰) से शराब के सम्बन्ध में पूछा कि क्या दवा के रूप में थोड़ी-सी इस्तेमाल की अनुमति है? तो उत्तर में पैग़म्बर (सल्ल॰) ने कहा, "नहीं, वह दवा नहीं है, बल्कि बीमारी है।" एक और व्यक्ति ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम एक ऐसे इलाक़े के रहनेवाले हैं, जो बहुत ही अधिक ठण्डा है और हमें मेहनत भी बहुत करनी पड़ती है। हम लोग शराब से थकावट दूर करते हैं और इसी से सर्दी का मुक़ाबला करते हैं। पैग़म्बर (सल्ल॰) ने पूछा कि जो चीज़ तुम पीते हो वह नशा करती है? उसने कहा कि हाँ! पैग़म्बर (सल्ल॰) ने कहा तो फिर इससे परहेज़ करो। उसने कहा कि हमारे इलाक़े के लोग तो नहीं मानेंगे। पैग़म्बर (सल्ल॰) ने कहा कि अगर वे न मानें तो उनसे जंग करो।[1]

पैग़म्बर ने कहा—"पीने की हर वह चीज़ जो नशा पैदा करे, हराम है।"[2]

एक मौक़े पर नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"अल्लाह ने लानत भेजी है शराब पर और उसके पीनेवाले पर और पिलानेवाले पर और बेचनेवाले पर और ख़रीदनेवाले पर और निचोड़ने और तैयार करनेवाले पर और ढोकर ले जानेवाले पर और उस आदमी पर जिसके लिए वह ढोकर ले जाई गई हो।"[3]

इस्लामी शासन में शराब पीनेवालों को दंड

इस्लामी शासन में शराब पीनेवाले को शारीरिक दण्ड दिए जाते थे। ये दण्ड हालात के मुताबिक़ कम या ज़्यादा होते थे। पैग़म्बर (सल्ल॰) के ज़माने में शराब पीनेवाले को गिरफ़्तार किया जाता और जूते, लात, मुक्के और बल दी हुई चादरों के सोंटे या खजूर के सोंटे मारे जाते थे। पैग़म्बर (सल्ल॰) के ज़माने में ये कोड़े अधिक-से-अधिक चालीस निर्धारित थे। हज़रत उमर (रज़ि॰) के शासनकाल के आरम्भिक दौर तक यही सज़ा निश्चित थी, किन्तु बाद में जब यह देखा गया कि लोग शराब पीने के अपराध से बाज़ नहीं आ

1. दे॰ तफ़हीमुल क़ुरआन हिस्सा-1 (हिन्दी), पृ॰ 556-557, हदीसशास्त्र : अबू-दाऊद-3683
2. हदीसशास्त्र : बुख़ारी-239
3. हदीसशास्त्र : अबू-दाऊद-3674

रहे तो सहाबा (रज़ि॰) के मशवरे से यह सज़ा दुगनी कर दी गई यानी चालीस की जगह अस्सी कोड़े मारे जाने लगे।[1]

हज़रत उमर (रज़ि॰) शराब पीने के सख़्त ख़िलाफ़ थे। इन्हीं के शासनकाल में क़बीला बनी-सक़ीफ़ के रुवेशिद नाम के एक व्यक्ति की दुकान इस आधार पर जलवा दी गई कि वह ख़ुफ़िया तौर पर शराब बेचता था। इसी प्रकार एक अवसर पर एक पूरा गाँव उमर (रज़ि॰) के आदेश पर इस अपराध के कारण जला दिया गया कि वहाँ चोरी-छिपे शराब बनाने और बेचने का कारोबार हो रहा था।[2]

जब शराब के हराम होने की घोषणा की गई

इस्लाम की समस्त विशिष्टताओं में से एक यह ख़ास विशिष्टता है कि उसके द्वारा किसी भी चीज़ के हराम होने की घोषणा पर्याप्त होती है। पैग़म्बर के ज़माने में किसी भी चीज़ के हराम होने की उद्घोषणा होते ही उसके अनुयायीगण उस चीज़ से इस क़द्र बचने लगते थे कि जैसे कि कोई बाशऊर आग से बचता है। उदाहरणतः जब शराब के हराम (अवैध) होने की घोषणा की गई थी तो उस समय जो लोग शराब पी रहे थे, अगर शराब उनके हलक़ में भी थी तो पूरी कोशिश के साथ उसे भी निकाल फेंका था। उनके अन्दर ईश्वर का डर इतना अधिक था कि वे ईश्वर के आदेश के उल्लंघन को महापाप मानते थे और इस अपराध पर काँप जाते थे। आज भी इस्लाम के सच्चे अनुयायीगण हर उस चीज़ से बचने की पूरी कोशिश करते हैं, जिस चीज़ का हराम होना सिद्ध है। रहे वे लोग जिनका नाम मुस्लिमों की तरह है और कुछ मौक़ों पर मुस्लिमों के कुछ रस्मो-रिवाज को अपना लेते हैं, लेकिन ईश्वर से डरते नहीं, अपना स्वच्छन्द जीवन गुज़ारते हैं—शराब पीते हैं और हर अश्लील कार्य करते हैं तथा जिन्होंने झूठ, फ़रेब को अपना व्यापार बना रखा है तो वे यथार्थतः इस्लाम के न माननेवाले, इनकारियों और इस्लाम के शत्रुओं में से हैं, जो ख़ुद को मुस्लिम कहकर

1. हदीसशास्त्र : अबू-दाऊद-3674
2. हदीसशास्त्र : अबू-दाऊद-3674

इस्लाम को अपने चरित्र और आचरण से बदनाम करते फिरते हैं। उन्हें देखकर इस्लाम के सम्बन्ध में धोखा नहीं खाना चाहिए। इस्लाम से अभिप्राय तो ईश्वर की आज्ञा के समक्ष अपने-आपको समर्पित कर देना है और ईश्वर के प्रति समर्पित व्यक्ति ही वास्तविक अभिप्राय में मुस्लिम है। ईश्वर की अवज्ञा करना कुफ़्र (इनकार) कहलाता है अर्थात् उद्दण्डता दिखाना, जो समर्पण का विरुद्धार्थी है। ईश्वर मनुष्य को इस उद्दण्डता से बचाए। (आमीन)

बाइबल का दृष्टिकोण शराब के सम्बन्ध में

बाइबल ईसाई धर्म का प्रमुख धर्म-ग्रन्थ है। यह छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का संग्रह है। इसमें 66 पुस्तिकाएँ हैं। यह दो भागों में विभक्त है—पुराना नियम (Old Testament) और नया नियम (New Testament)। पुराना नियम में 39 पुस्तिकाएँ और नया नियम में 27 पुस्तिकाएँ हैं। यह अनेक उच्च नैतिक शिक्षाओं से परिपूर्ण ग्रन्थ है।

पवित्र ग्रंथ बाइबल में शराब के लिए अंग्रेज़ी में वाइन (Wine) और हिन्दी में 'दाखमधु' शब्द प्रर्युक्त हुए हैं। दाखमधु दो शब्द 'दाख' और 'मधु' से मिलकर बना है। 'दाख' वस्तुतः संस्कृत शब्द 'द्राक्षा' का तद्भव रूप है। इसका सामान्य अर्थ होता है—अंगूर। इसी प्रकार दूसरा शब्द मधु भी संस्कृत का ही शब्द है और इसका प्रयोग जब 'दाख' के साथ होता है, तो इसका सामान्य अर्थ होता है—मद्य, मदिरा अर्थात् शराब। अतएव 'दाखमधु' का अर्थ हुआ—अंगूर की शराब।

बाइबल के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पुराने नियम के समय में दाखमधु के पीने या इस्तेमाल का आम चलन था। उदाहरणतः अश्शूर का राजा सन्हेरीब जब यहूदा राज्य पर क़ब्ज़ा करने के लिए वहाँ के राजा 'हिज़किय्याह' के विरुद्ध अपने तर्त्तान, रबसारीस और रबशाके को एक बड़ी सेना देकर भेजा, तो रबशाके ने यहूदा पहुँचकर वहाँ की जनता को वहाँ के राजा हिज़किय्याह के ख़िलाफ़ तरह-तरह से भड़काया और कई चीज़ों का उन्हें लालच भी दिया। उन दी गई लालच की कई चीज़ों में से एक 'दाखमधु' का भी लालच था। हिन्दी बाइबल के शब्द हैं कि उसने कहा

था—

"हिज़किय्याह की मत सुनो! अश्शूर का राजा कहता है कि भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो और मेरे पास निकल आओ और प्रत्येक अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष के फल खाता और अपने-अपने कुण्ड का पानी पीता रहे, तब मैं आकर तुमको ऐसे देश में ले जाऊँगा, जो तुम्हारे देश के समान अनाज और नए 'दाखमधु' का देश, रोटी और दाख की बारियों का देश, जलपाइयों और मधु का देश है।" (2 राजा॰ 18/31-32)

लेकिन इसी के साथ बाइबल से यह भी ज्ञात होता है कि 'दाखमधु' एक अपवित्र और अशुद्ध पेय समझा जाता था। इसे धार्मिक अनुष्ठानों और पवित्र स्थलों में पीकर जाने या पीने पर सख़्त मना था। उदाहरणतः लैव्यव्यवस्था में है कि यहोवा ने हारून से कहा—

"जब-जब तू या तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में आएँ तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पिए हो, न और किसी प्रकार का मद्य।"
(10/9)

बाइबल की पुस्तक यहेज़केल में है—

"(पवित्र स्थान के) भीतर आँगन में जाने के समय कोई याजक दाखमधु न पिए"। (44/21)

इसी प्रकार दाखमधु का प्रयोग यानी पीना उन लोगों के लिए भी सख़्त हराम और अवैध था जो 'नाज़ीर' होते थे। 'नाज़ीर' उन लोगों के लिए पारिभाषिक रूप में बोला जाता था जो परमेश्वर का कार्य करने के लिए ईश्वर के प्रति अपने आपको समर्पित कर लेते थे और हर प्रकार की अशुद्ध एवं अपवित्र चीज़ों से परहेज़ करते हुए अत्यन्त पवित्र, संयमित और सुचरित्र जीवन व्यतीत किया करते थे। वस्तुतः 'नाज़ीर' शब्द इबरानी भाषा के शब्द 'नाज़ार' से निस्सृत है और इसका शाब्दिक अर्थ होता है—समर्पित लोग, अर्थात् ईश्वर का होकर जीनेवाले लोग। 'नाज़ीर' की दशा में व्यक्ति को किन-किन नियमों का पालन करना होता था, इसका विस्तृत वर्णन बाइबल

की पुस्तक 'गिनती' में किया गया है। उसमें दाखमधु के प्रति यहोवा ने मूसा से कहा कि–

"इस्राइलियों से कह कि जब कोई पुरुष या स्त्री नाज़ीर की मन्नत अर्थात् अपने को यहोवा के लिए न्यारा करने की विशेष मन्नत माने तब वह दाखमधु आदि मदिरा से अलग रहे। वह न दाखमधु और मदिरा का सिरका पिए और न दाख का कुछ रस भी पिए, वरन् दाख न खाए चाहे हरी हो या सूखी। जितने दिन वह न्यारा रहे उतने दिन तक बीज से लेकर छिलके तक, जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उसमें से कुछ न खाए।" (गिनती 6/1-4)

अतः स्पष्ट आदेश था कि नाज़ीर यानी जो भी परमेश्वर के प्रति अपने आप को समर्पित कर दे तो फिर वह दाखमधु और सभी प्रकार की मदिरा से सदैव दूर रहे अर्थात् कभी भी मदिरा न पिए। उपरोक्त आदेश में यहाँ तक परहेज़ करने का भाव मिलता है कि जिस चीज़ से–मुख्यतः अंगूर (दाख) से–मदिरा यानी शराब बनाई जाती है, उस अंगूर से ही परहेज़ किया जाना चाहिए और नाज़ीर लोग प्रायः ऐसा ही संयमित एवं पवित्र जीवन व्यतीत किया करते थे।

पुराने विधान के समय का सबसे बड़ा नाज़ीर 'शिमशोन' को माना जाता है। (दे॰न्या॰ 13/5,7); जबकि नए नियम के समय का नाज़ीर 'यूहन्ना' बपतिस्मा देनेवाले को स्वीकार किया जाता है। यूहन्ना जन्म से ही ईश्वर के प्रति समर्पित रहनेवाले एक महान व्यक्तित्व के मालिक हुए हैं। इनका जन्म एक याजक घराने में वृद्ध माता-पिता की परमेश्वर से की गई प्रार्थना के प्रत्युत्तर में हुआ था। इनके पिता का नाम 'ज़करयाह' और माँ का नाम इलीशिबा था। यूहन्ना के पैदा होने की शुभ-सूचना देने के साथ ही ईशदूत ने यूहन्ना के सम्बन्ध में कहा था–

"वह प्रभु के सामने महान होगा और दाखरस और मदिरा कभी न पिएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा और इस्राइलियों में से बहुतेरों को उनके प्रभु परमेश्वर की

ओर फेरेगा।"   (लूका 1/5-6)

मदिरा यानी 'दाखमधु' की बाइबल में बड़ी बुराई और निन्दा मिलती है। बाइबल की पुस्तक नीतिवचन में दाखमधु के कुप्रभावों के प्रति सचेत करते हुए कहा गया है कि इसकी ओर देखें भी नहीं और कहा कि यह पहले देखने में सुन्दर और आकर्षक लगता है, लेकिन यह साँप की तरह डसता और करैत[1] के समान काटता है। कहा—

> "जब दाखमधु लाल दिखाई देता है और कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है और जब वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना। क्योंकि अन्त में वह सर्प के समान डसता और करैत के समान काटता है।"   (23/31-32)

दाखमधु पीने के बाद मनुष्य की क्या दुर्दशा होती है, लोगों को सचेत करते हुए बाइबल में कहा गया है—

> "तू विचित्र वस्तुएँ देखेगा और उलटी-सीधी बातें बकता रहेगा। तू समुद्र के बीच लेटनेवाले या मस्तूल के सिर पर सोने के समान रहेगा। तू कहेगा कि मैंने मार तो खाई, परन्तु दुखित न हुआ। मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी।" (नीति॰23/33-35)

अर्थात् कहा गया कि दाखमधु इतना निकृष्ट पेय है कि जब उसे पी लोगे तो तुम ज़बान से उलटी-सीधी बकोगे और मस्तूल[2]—के सिरे पर लेटा हुआ के समान कि कब नीचे गहरे पानी में गिर पड़ेगा ऐसा डर तुम्हारे चलने में लगेगा यानी पैर लड़खड़ाने लगेंगे। इसी प्रकार जब उस नशे के वशीभूत

---

1. 'करैत' सापों की एक प्रजाति है। यह अत्यन्त विषैला सर्प होता है।
2. नौकाओं में स्थिरता से खड़े उन लम्बे खम्बों को 'मस्तूल' (Mast) कहा जाता है, जिन पर पाल (Sail) लगाया जाता है। खम्बों को स्थिरता से खड़ा रहने के लिए गाई तारों (Guy-wires) से बांधा जाता है। वैसे किसी भी खम्बे को 'मस्तूल' बोल दिया जाता है, जो भी स्थिरता से उर्ध्व खड़ा हो। यही कारण है कि नौकाओं को गहरे पानी में जिन खम्बों के सहारे रोका जाता है, उसे भी 'मस्तूल' कह दिया जाता है। सम्भवतः यहाँ पर अभिप्राय इन्हीं मस्तूलों से है। ये मस्तूल लकड़ी या लोहे किसी के भी हो सकते हैं।

होकर लोगों को सताने लगोगे तो लोग बर्दाश्त के बाहर हो जाने के बाद तुम्हारी पिटाई लगाएँगे, लेकिन तुम्हें पता नहीं चलेगा और जब होश आएगा तो उस समय उसकी तकलीफ़ का एहसास होगा। अतः यह कितनी घृणित एवं निकृष्ट दशा होती है।

इसी प्रकार 'इफ़िसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री' में कहा गया है कि दाखरस के मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुच्चापन आता है।

(दे॰5/18)

'लुच्चापन' अर्थात् दुश्चरित्रता, नीचता एवं लफंगापन आता है। अतः यदि सुच्चरित्रता, उच्चता व मर्यादाशीलता चाहते हो तो 'दाखमधु' यानी शराब से दूर रहो।

दाखमधु के उपरोक्त कुप्रभावों के स्पष्ट उल्लेखों से ऐसा ज्ञात होता है कि प्रथमतः व्यक्तियों को इससे दूर रहने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया जाना अभीष्ट था और वक्रात्मक शैली में अवैध घोषित करना निर्दिष्ट था। दाखमधु (शराब) की निकृष्टता इसके पीनेवालों के प्रति किया जानेवाला निर्दयतापूर्ण व्यवहार और निर्धारित किए गए दण्ड से भी ज्ञात होती है। व्यवस्थाविवरण में है कि अगर बेटा माता-पिता का कहना न माननेवाला, हठीला और उड़ाऊ होने के साथ-साथ पियक्कड़ (अर्थात् मद्यपान करनेवाला, शराबी) भी हो तो उसे पकड़कर नगर के पुरनियों के पास ले जाया जाए और उनको पूरी हालत बताई जाए। इसके बाद उसे दण्ड स्वरूप सभी पुरुष पथराव करके मार डालें। (दे॰21/18-21)

शराब के सन्दर्भ में बाइबल की यह एक झलक है और इससे स्पष्ट है कि बाइबल से निसृत धर्म ईसाई का दृष्टिकोण भी शराब को पसन्द नहीं करता तथा ईश्वर के प्रति समर्पित लोगों के लिए तो शराब का पीना बिलकुल ही अवैध और हराम मानता है।

सिख धर्म का दृष्टिकोण शराब के सम्बन्ध में

सिख धर्म हमारे भारत के प्रमुख धर्मों में से एक धर्म है। इस धर्म के माननेवालों को 'सिख' कहा जाता है। ये दुनिया के लगभग सभी देशों में

पाए जाते हैं, किन्तु भारत में इनकी आबादी प्रमुख रूप से पाई जाती है। सिख धर्म का प्रमुख धर्म-ग्रन्थ 'आदि श्री गुरुग्रन्थ साहिब' है। इस ग्रन्थ के प्रति सिखों की श्रद्धा एवं आस्था उसी प्रकार है, जैसी कि जीवन्त सभी गुरुओं के प्रति होती थी और है। अर्थात् "आदि श्रीगुरुग्रन्थ साहिब" अब गुरुओं का स्थानापन्न है। यह धर्मग्रन्थ मनुष्य को त्याग, बलिदान, प्रेम, समानता, उदारता, सुचरित्रता और मानव-सेवा की उत्कृष्ट शिक्षा देता है। यह अपने माननेवालों को नैतिकता के उच्च शिखर पर देखना चाहता है। यह उन सभी चीज़ों पर कुठाराघात करता है और लोगों को उनसे रोकता है, जो भी मनुष्य को दुष्ट या दुष्टता के कुमार्ग पर ले जाती हों। हम सभी जानते हैं कि शराब हर बुराई की जननी है। यह मनुष्य का हर दृष्टि से पतन करती है और अनीति पर चलने को उभारती है। इसी लिए अनिवार्य था कि श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी जैसा उच्च नैतिक शिक्षा देनेवाला ग्रन्थ इसके सेवन से मनुष्य को रोकता। अतः श्री गुरुग्रन्थ साहिब ने शराब की भर्त्सना भी की है और अपने माननेवालों को इसका सेवन करने से दूर रहने को भी कहा है। इसकी एक झलक प्रस्तुत है। शराब की निंदा करते हुए कहा गया है—

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आई।
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाई।
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाई।
झूठा मदु मूलि न पीचई जेका पारि वसाई।।

(पृ॰ : 554)

"जिसके पान करने (पीने) से बुद्धि मर जाती है और बकने का जोश आ जाता है, अपने-पराए की पहचान नहीं रहती, मालिक की ओर से धक्के लगते हैं, जिसके पान करने से पति (स्वामी, परमात्मा) विस्मृत हो जाता है और दरबार में सज़ा मिलती है, ऐसी गुणहीन शराब जहाँ तक वश चले कभी नहीं पीनी चाहिए।[1]

---

1. यह अनुवाद और लिप्यान्तरण 'भुवन वाणी ट्रस्ट' लखनऊ, से हिन्दी में प्रकाशित "आदि श्रीगुरुग्रन्थ साहिब" संस्करण चतुर्थ सन् 1995 ई॰ दूसरी सैंची के पृ॰ 573-574 से लिए गए हैं। —लेखक

'श्री गुरुग्रन्थ साहिब' जी के ये शब्द कि 'न पीचई जेका पारि वसाई' यानी कि जहाँ तक वश चले कभी नहीं पीनी चाहिए' स्पष्ट करते हैं कि शराब से यथासम्भव, जहाँ तक हो सके मनुष्य को शराब पीने से बचना है। बाह्य शब्दों से यह परामर्श प्रतीत होता है, किन्तु वास्तव में अभिव्यक्ति शैली बताती है कि कहने का उद्देश्य यह है कि मनुष्य को शराब कभी भी नहीं पीनी चाहिए; क्योंकि यह मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट कर देती है, रब को नाराज़ करने का कारण बनती है और प्रभु के यहाँ सज़ा दिलाती है।

शराब एक अत्यन्त निकृष्ट पेय है। कोई भी नीतिवान, सुहृदय एवं सुचरित्र व्यक्ति कभी भी शराब का सेवन नहीं करता, चाहे वह कितनी ही विशुद्धता एवं निर्मलता के साथ क्यों न बनाई गई हो। श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी का कथन है—

सुरसरी सलल क्रित बारूनी रे संतजन करत नहीं पानं।।

(पृ० : 1293)

अर्थात् "गंगाजल की बनी शराब भी संतजन पान नहीं करते।"[1]

सिख धर्म में जब बालक 18 वर्ष का हो जाता है तब उसका 'पहुल' या 'पाहुल' नामक संस्कार कराया जाता है। इस संस्कार के बाद व्यक्ति खालसा पंथ का सदस्य बन जाता है। इसे विधिवत् सिख धर्म की दीक्षा लेना भी कहा जाता है। इस संस्कार का पात्र वही होता है, जो स्वतंत्र रूप से सिख-समाज को संचालित करनेवाले सभी नियमों का पालन करने को हृदय से स्वीकार करता है। इस हेतु उनसे पूछा भी जाता है। इस संस्कार को ग्रहण कर लेने के बाद व्यक्ति को सिख पंथ के विभिन्न नियमों का परिपूर्ण रूप से पालन करना होता है। उन नियमों में से एक यह है कि व्यक्ति को मादक दृव्यों के सेवन करने से सदैव दूर रहना है, यहाँ तक कि वह तम्बाकू तक का सेवन नहीं कर सकता।[2] खालस पंथ का हर सदस्य एक फ़ौज की भाँति होता है।

---

1. पूर्वोक्त, पृ० : 573
2. दे० सिख और सिख धर्म, लेखक : बलवंत सिंह आनन्द प्रकाशक : दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, प्रथम संस्करण 1982, पृ० 90-91

सिख धर्म में शराब एवं अन्य मादक द्रव्यों के सेवन पर सख़्त प्रतिबन्ध होने के उपरान्त भी बहुत से उद्दण्ड लोग इसका उल्लंघन कर जाते हैं। सिख-समाज पहले उनकी मात्र सख़्त भर्त्सना करता था और नशेड़ी को उपेक्षा की दृष्टि से देखता था। किन्तु अब शराब पीने से रोकने के लिए सिख-समाज का अकाली-तख़्त ने सन् 2013 ई॰ में शराबियों को अत्यन्त भ्रष्ट और अधम मानते हुए शराब पीनेवालों के प्रति सख़्त रवैया अपनाया है और आदेश जारी किया है कि अब शराब पीनेवाले सिख अपने यहाँ 'आदि श्री गुरुग्रन्थ साहिब' को नहीं रख सकते।[1]

इसी प्रकार सन् 2016 ई॰ में सिख-समाज अपने समाज के शराब पीनेवालों एवं धूम्रपान करनेवालों के विरुद्ध एक और सख़्त फ़ैसला ले चुका है। इस हेतु सिख गुरुद्वारा अधिनियम 1925 में बड़ा बदलाव किया गया। पहले इस अधिनियम के अन्तर्गत 21 वर्ष की आयु के सभी सिखों को अपने सभी धार्मिक निकायों में वोट डालने का अधिकार प्राप्त था। अब इस बदलाव के बाद उन सिखों का वोट डालने का अधिकार छीन लिया गया है या रद्द कर दिया गया है जो भी शराब पीते और धूम्रपान करते हैं तथा दाढ़ी और केस कटवाते हैं।[2]

वास्तव में सिख धर्म मनुष्य से चैतन्य एवं सजग जीवन बिताने का याचक है। वह चाहता है कि मनुष्य पूरे होशो-हवास और स्वस्थपूर्ण जीवन बिताए। इसी लिए वह आरम्भ से ही मनुष्य की बुद्धि को भ्रष्ट एवं चेतनाहीन कर देनेवाली चीज़ों से बचाए रहने का उपक्रम करता रहा है। अतः कहा जा सकता है कि सिख धर्म का दृष्टिकोण भी शराब पीने और अन्य मादक द्रव्यों के सेवन करने के विरुद्ध है। यह अत्यन्त सराहनीय और मानव-समाज के प्रति हितकारी प्रयास है।

---

1. दे॰ अमर उजाला, देहरादून, 19 सितम्बर 2013 ई॰
2. दे॰ वन इण्डिया, हिन्दी, प्रकाशित 10 मई 2016, लेख॰ : बबिता झा

संसार में पाए जानेवाले कुछ अन्य मादक पदार्थ और उनके नुक़सान

ऐसे पदार्थ जो मनुष्य को नींद या नशे की दशा में ला देते हैं, सामान्य परिभाषा में नशीले पदार्थ कहलाते हैं। इन्हें ड्रग्स या मादक पदार्थ भी कहा जाता है। नशीले पदार्थ रासायनिक तथा अरासायनिक दोनों प्रकार के होते हैं। रासायनिक मादक पदार्थों को सिंथेटिक ड्रग्स कहा जाता है। उदाहरणार्थ– हेरोइन, कोकीन, ब्राउन सुगर, स्मैक, सुल्फा, भुक्की, एल॰एस॰डी॰, मारिजुआना आदि रासायनिक मादक पदार्थ हैं, जबकि भाँग, अफीम, तम्बाकू आदि अरासायनिक हैं। शराब, सीरप और कई प्रकार की नशे की गोलियाँ भी रासायनिक वर्ग में ही आती हैं। यहाँ कुछ मादक पदार्थों का जो नशे के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं, संक्षिप्त परिचय देने के साथ उनका मानव-शरीर पर पड़नेवाला कुप्रभाव की चर्चा करेंगे–

कोकीन (Cocaine)

यह कोका पौधे की पत्तियों से तैयार किया जाता है। यह केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का एक उत्तेजक और क्षुधा-मारक होता है। गैर औषधीय और सरकार द्वारा गैर-मंजूर प्रयोजनों में इसे रखना, उपजाना और वितरण करना दुनिया के लगभग सभी भागों में अवैध एवं प्रतिबंधित है। यह हार्ड ड्रग माना जाता है। इसी कारण इसके रखने और व्यापार करने पर कठोर दण्ड दिया जाता है। यद्यपि पेरू और बोलिविया जैसे कुछ देशों में स्थानीय लोगों द्वारा पारम्परिक उपभोग के लिए कोका-पत्ती की खेती की अनुमति है, किन्तु फिर भी कोकीन के उत्पादन, बिक्री और खपत पर प्रतिबंध है। नशीले पदार्थ के रूप में परिवर्तित कोका अर्थात् कोकेन एक क्रिस्टलीय ट्रॉपेन उपक्षार एवं रसायन होता है। इसका रासायनिक सूत्र $C_{17} H_{21} NO_4$ होता है। इसका

रासायनिक नाम बेंजोइल मीथाइलिकगोनाइन (Benzoylmethylecgonine) है। आरम्भ में इसके जनक जर्मन रसायनज्ञ फ्रेडरिक मैडके ने इसका नाम 'एरिथ्रोसाइलिन', (Erythrocyline) रखा था। बाद में सन् 1860 ई॰ में वैज्ञानिक अल्बर्ट नीमन ने इसका नाम 'कोकेन' कर दिया।

कोकीन पाउडर और फ्रीबेस दोनों रूपों में मिलता है। इसका पाउडर घुलनशील होता है, जबकि इसका क्रिस्टल रूप अघुलन होता है। इसके पाउडर का नशा करनेवाले नाक के द्वारा अन्दर खींचकर या अपने मसूड़ों पर रगड़कर उपयोग करते हैं, जबकि क्रिस्टल रूप को धुम्रपान के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यह व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क दोनों के लिए बहुत ही नुक़सानदायक होता है। इसकी थोड़ी मात्रा भी व्यक्ति को मौत के मुँह में धकेल देती है। इसके उपयोग से व्यक्ति में अनिद्रा, हर्ट अटैक, फेफड़े सम्बन्धी अनेक बीमारियाँ और नपुंसकता एवं विभिन्न यौन संक्रमण होने की अधिक सम्भावना बढ़ जाती है। इसके नशे का आदि व्यक्ति अपराधी प्रवृत्ति की ओर बड़ी तेज़ी से बढ़ता है।

हेरोइन (Heroin)

इसका लोगों में ब्लैक टार, एच, घोड़ा, कचरा, शाफ्ट चिट्टा इत्यादि नाम भी प्रचलित हैं। यह सफेद या भूरे रंग का पाउडर या चिपचिपा काले रंग का पदार्थ होता है। यह एशियाई अफ़ीम के पौधे के बीज-फली में एक प्राकृतिक पदार्थ से बनता है। यह नशा हेतु धूम्रपान या नाक के द्वारा लिया जाता है। यह बहुत ही तीव्र नशाकारक होता है। इसे इंजेक्शन द्वारा भी कुछ लोग लेते हैं। यह बहुत ही हानिकारक नशीली वस्तु है। इसके सेवन से व्यक्ति में हृदय सम्बन्धी विभिन्न बीमारियाँ तथा एच॰आई॰वी॰, एड्स और हेपेटाइटिस जैसे प्राणघातक संक्रमण होने की अधिक संभावना हो जाती है। हेरोइन को पहली बार सन् 1874 ई॰ में सी॰आर॰ एल्डर राइट द्वारा मॉर्फिन (Morphene) से बनाया गया था। अतः यह अफीम पोस्पी का एक प्राकृतिक उत्पाद है। इसको लाइसेंस के बिना बनाने, रखने और बेचने पर सख़्त प्रतिबन्ध है। यह स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होता है। इसके उपभोग से व्यक्ति के

गुर्दे, फेफड़े और लीवर बड़ी तेज़ी से प्रभावित होते हैं और व्यक्ति विभिन्न प्रकार की बीमारियों का शिकार हो जाता है। हेपेटाइटिस-सी का होना इसकी सामान्य बीमारी है। इसके उपभोक्ता को त्वचा संक्रमण और अनिद्रा का रोग लग जाता है। हाईब्लडप्रेशर, हार्ट रेट का बढ़ना, पैनिक अटैक का होना आदि इसके उपभोक्ता के शारीरिक दुष्प्रभाव हैं। नशा करनेवाले इसे मुख से भी लेते हैं और पानी में घोलकर इंजेक्शन के रूप में भी लेते हैं। इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। शरीर में मौजूद एक कार्बनिक रसायन डोपामाइन, जो खुशी एहसास करानेवाला हार्मोन होता है और न्यूरोट्रांसमीटर के रूप में कार्य करता है, हेरोइन ड्रग के उपयोग से इसकी निर्भरता ड्रग पर तीव्रता से बढ़ जाती है। नशे का आदी व्यक्ति जब तक कोई भी ड्रग नहीं लेता, अवसाद की दशा में पड़ा रहता है।

ब्राऊन शुगर ड्रग (Brown Sugar Drug)

यह भी स्मैक का ही एक रूप होता है। यह वस्तुतः अशुद्ध हेरोइन होती है। इसमें शुद्ध हेरोइन लगभग 20% होती है और 80% चाक पाउडर, जिंक ऑक्साइड आदि होता है। यह अशुद्ध हेरोइन होने के कारण शुद्ध हेरोइन की तुलना में बहुत सस्ता होता है, किन्तु नुक़सान की दृष्टि से बहुत अधिक हानिकारक होता है। यह कम ताप में ज्वलनशील होता है, इसी कारण नशे के आदी लोग इसे धूम्रपान के रूप में लेते हैं। कुछ नशेड़ी इसे घोलकर इंजेक्शन के रूप में भी लेते हैं, किन्तु यह पाउडर जल्द घुलता नहीं, इसी लिए इसे इंजेक्शन के रूप में लेने में कठिनाई होती है। इसके अन्य नाम जंक, स्केग, डोप, चॉ और कभी-कभी स्मैक भी बोला जाता है। इसका स्वास्थ्य पर बहुत ही गम्भीर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसका पहली बार सेवन करने से उलटी, मतली, सिरदर्द, त्वचा सम्बन्धी विभिन्न रोगों का होना और मुख का शुष्क रहना एक सामान्य दुष्प्रभाव है। लम्बे समय तक इसका उपभोग करने से व्यक्ति धूमिल मानसिकता (Foggy Mental), श्वसन सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की समस्याओं तथा न्यूरोलॉजी, लीवर, किडनी और हृदय सम्बन्धी अनेकों क़िस्म की तकलीफ़ों का शिकार हो जाता है।

गाँजा (Cannabis or Marijuana)

यह भी एक गम्भीर दुष्प्रभावक मादक पदार्थ है। यह गाँजे के मादा पौधे के फूल और शाखाओं से अनेक प्रक्रिया पूरी करके तैयार किया जाता है। इसका सेवन तम्बाकू के साथ किया जाता है, जिस कारण यह कैंसर का प्रमुख कारण बनता है। इसके सेवन से चर्म रोग होने की अधिक सम्भावना बढ़ जाती है। गाँजे के सेवन से मस्तिष्क पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। इसके सेवन से डिप्रेशन, सिज़ोफ्रेनिया (Schizophrenia)[1] जैसी मानसिक बीमारियों का ख़तरा बढ़ जाता है। मस्तिष्क के दो महत्वपूर्ण न्यूरोट्रांसमीटर—सेरोटोनिन और नॉरएड्रेनालाईन (Noradrenaline), जो मानसिक भावनाओं को नियंत्रित करते हैं, गाँजे का सेवन इनको बहुत अधिक प्रभावित करता है। ये न्यूरोट्रांसमीटर मनुष्य की मानसिक भावनाओं—विशेषकर डर की भावना को नियंत्रित करते हैं। इनके प्रभावित होने से व्यक्ति डरा-डरा-सा रहने लगता है और असन्तुलित व्यवहार करने लगता है।

चरस

इसका दूसरा नाम सुल्फ़ा भी है। यह भी गाँजे के पौधे से ही प्राप्त होता है। यह गाँजे के पौधे की शाखाओं और पत्तियों से निकलनेवाली एक प्रकार की 'राल' होती है, जो बाद में गोंद की तरह हो जाती है। यह तीव्र नशाकारक होता है। इसका सेवन करते ही तुरन्त नशा आ जाता है और आँखें बहुत लाल हो जाती हैं। यह साधारण गाँजा और भांग से भी अधिक हानिकारक होता है। लोग इसका तम्बाकू के साथ धूम्रपान के रूप में सेवन करते हैं। इससे सहज ही कैंसर होने की अधिक सम्भावना होती है। इसके अधिक सेवन करने से मनुष्य का मस्तिष्क बहुत जल्द विकार-ग्रस्त हो जाता है।

इसके चरस नाम पड़ने के सम्बन्ध में कहा जाता है कि पहले मध्य

---

1. यह एक गम्भीर मानसिक बीमारी है। इसका मरीज़ भ्रमित एवं भयग्रस्त रहता है। जिसे यह बीमारी लग जाती है वह जीवन से जल्द निराश हो जाता है और कभी-कभी आत्महत्या तक कर बैठता है।

एशिया से चमड़े के थैलों में गाँजे के इस गोंद को भरकर लाया जाता था या रखा जाता था, इसी कारण इसका नाम चरस पड़ गया। क्योंकि भैंस व बैल के चमड़े से बने थैले को चरस, पुरा या मोट कहा जाता है।

अफ़ीम

मादक पदार्थ अफ़ीम, अफ़ीम के पौधे के कच्चे फल जिसे डोडा कहा जाता है, के दूध को सुखाकर तैयार किया जाता है। इसमें 12% तक मार्फिन (Marphine) होती है। अफ़ीम का दूध निकालने के लिए उसके कच्चे फल यानी डोडा में किसी नुकीली या तेज़ धारवाली चीज़ से उसमें हलके चीरे लगाए जाते हैं। यह चीरा आमतौर पर शाम में लगाए जाते हैं। चीरा लगाने से उस डोडे से दूध की तरह का तरल पदार्थ निकलने लगता है। कुछ लोग उस दूध को उसी समय किसी बर्तन में एकत्र कर लेते हैं। कुछ लोग चीरा लगाकर छोड़ देते हैं और दूसरे दिन सुबह में उसे एकत्र करते हैं। प्रारम्भ में डोडे से स्रावित पदार्थ गाढ़े दूध की तरह होता है, बाद में यह सूखकर भूरे या काले रंग में बदल जाता है। यही सूखा दूध अफ़ीम होता है। यह तीव्र मादक होता है। इसे निरन्तर लेने से व्यक्ति इसका आदी हो जाता है और अनिन्द्रा व अनेक बीमारियों का शिकार हो जाता है। खसखस या पोस्ता के दाने अफ़ीम के ही बीज होते हैं, जो डोडा के पक जाने और सूख जाने के बाद उसे फाड़कर निकाला जाता है। इसी कारण अफ़ीम को पोस्पी भी बोला जाता है।

स्मैक (Smack)

यह भी अफ़ीम के दूध से ही तैयार की जाती है। स्मैक बनाने हेतु अफ़ीम को चूना मिलाकर गर्म किया जाता है। उबल जाने के बाद इसमें एसीटेट एनहाइड्राइड मिलाया जाता है। इससे यह दूध जैसे फट जाता है। इसके बाद गाढ़े पदार्थ को पानी से अलग कर लिया जाता है। इस अलग किए गए पदार्थ को छाया में सुखा लिया जाता है। सूख जाने के बाद जो पदार्थ तैयार होता है, वह स्मैक होती है। यह तैयार स्मैक उपयोग में लाई गई अफ़ीम की तुलना में बहुत कम मात्रा में तैयार होती है। कहा जाता है

कि एक किलो अफ़ीम से मात्र 30 ग्राम स्मैक तैयार होती है। अर्थात् 30 किलो अफ़ीम से मात्र एक किलो स्मैक बन सकती है। स्मैक तमाम नशीले पदार्थों की तुलना में अधिक मादक (नशीला) होती है और हानिकारक भी। कहा जाता है कि इसे वह व्यक्ति भी जिसको इसकी लत लग चुकी हो जब इसका सेवन करता है तो इसका सेवन करते ही नींद जैसी दशा में आ जाता है और जब व्यक्ति पहली बार इसका सेवन करता है तो एक-दो दिन उठने के योग्य भी नहीं रहता। इसकी लत लग जाने के बाद व्यक्ति हर समय इसके नशे में रहना चाहता है और इसका नशा न मिलने पर व्यक्ति सदैव दुर्बल और विक्षिप्तावस्था में रहता है। इसका सेवन करने से मनुष्य के शरीर पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति एक महीने ही में इसका निरन्तर सेवन करने से एक ढाँचा मात्र शेष रह जाता है। यह एक अत्यन्त हानिकारक नशीला पदार्थ है। यही कारण है कि यह लगभग सभी देशों में प्रतिबन्धित है और पूर्ण शासकीय अनुमति के बिना इसका उत्पादन, व्यापार या भण्डारण सख़्त अपराध है।

एल॰एस॰डी॰

इसका पूरा नाम लीसर्जिक एसिड डाईएथिलामाइड (Lysergic Acid Diethylamide) है। इसे LSD-25 के नाम से भी जाना जाता है। यह सिंथेटिक ड्रग्स की श्रेणी में आता है। इसका सेवन करने के बाद ही व्यक्ति एक स्वप्नावस्था में आ जाता है; वह ऐसे विचारों में खो जाता है, जिसका वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसको लोग इंजेक्शन के रूप में भी लेते हैं और मुख से भी। इसका सेवन करने के बाद व्यक्ति एक विचित्र प्रकार के भय का शिकार हो जाता है। कहा जाता है कि कैलीफोर्निया के एक एल॰एस॰डी॰ के नशेड़ी को नशे की दशा में यह सनक सवार हो गई कि वह पक्षियों की तरह हवा में उड़ सकता है। अतः वह एक इमारत की दसवीं मंज़िल पर चढ़ा और वहाँ से वह कूद पड़ा और मौत का शिकार हो गया। इसी प्रकार एक व्यक्ति को इसके नशे में यह विभ्रम हो गया कि वह अपने आकार से दुगुना हो गया है और उसके पैर 6 फुट लम्बे हो गए हैं। वह पासवाली मंज़िल में कूदा और नीचे जा गिरा और मर गया।

यह सनक पैदा कर देनेवाला बहुत ही घातक नशीला पदार्थ है। यह भूख को ख़त्म कर देता है और व्यक्ति सदैव संसार से कटा हुआ अवसाद की दशा में रहा आता है। इसके सेवन से व्यक्ति मधुमेह और रक्तचाप का भी रोगी हो जाता है।

संसार में और अनेकों प्रकार के नशीले पदार्थ पाए जाते हैं जो तीव्र नशाकारक होते हैं। नशीले पदार्थों के मानव-शरीर पर पड़नेवाले कुप्रभावों से स्पष्ट हो चुका है कि ऐसा कोई नशीला पदार्थ नहीं जो थोड़ी मात्रा में भी अपना वृहद कुप्रभाव न डालता हो। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि इन ठण्डे विषों (ज़हरों) से हमेशा दूर रहे।

नशा एक अभिशाप

उपरोक्त वार्ता से स्पष्ट हुआ कि मादक पदार्थों का अनावश्यक सेवन मानव-जीवन के लिए दुखदायक और समाज के लिए एक अभिशाप है। शराब से लेकर चाहे गांजा, अफीम, भांग, हेरोइन, कोकीन, चरस व ड्रग हो या तम्बाकू व तम्बाकू के उत्पाद बीड़ी-सिगरेट ही क्यों न हों, ये सभी मादक चीज़ें मानव-जीवन का विनाश करती हैं। इन सभी चीज़ों की मूल प्रकृति में यह उपद्रव बसता है कि ये जिस व्यक्ति को भी मुँह लग जाती हैं, तो फिर आख़िरी दम तक उसका पीछा बड़ी ही मुश्किल से छोड़ती हैं। ये अपने उपभोक्ता को दीमक की तरह अन्दर से खोखला कर देती हैं और मनुष्य इनकी ज़द में आकर हर तरह से तबाह व बरबाद होकर रह जाता है। आजकल बड़े तो बड़े छोटे बच्चे भी नशा के आदी होते जा रहे हैं; यह अत्यन्त चिन्ता का विषय है। डायचे वेले (14 दिसम्बर 2016) में प्रकाशित एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत में नशे के आदि हर पाँच में से एक व्यक्ति की उम्र 21 साल से कम है। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चे नशा करनेवालों की देखा-देखी में 11 साल की उम्र में ही ड्रग लेना शुरू कर देते हैं। इनमें से 5 प्रतिशत बच्चों की उम्र 12 से 17 साल के बीच पाई गई। यह समस्या उन लोगों में और अधिक पाई गई जो बेघर हैं। रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत के लगभग दो करोड़ बेघर बच्चों में से 40-70 प्रतिशत बच्चे किसी न किसी प्रकार ड्रग के सम्पर्क में आ जाते हैं। इनमें से कई 5 साल से भी कम उम्र के होते हैं। एक सर्वे में यह पाया गया है कि बच्चे इन्हेलैंट्स (नाक से श्वास खींचना) के माध्यम से सबसे अधिक नशा कर रहे हैं। कुल बच्चों की 1.17 प्रतिशत आबादी इन्हेलैंट्स के माध्यम से नशा कर रही है, जबकि वयस्कों में यह 0.5 प्रतिशत है।

(दे॰ डिजिटल ब्यूरो, अमर उजाला, 04 जुलाई 2019)

इसी प्रकार बच्चे और युवाओं के साथ-साथ बड़े बुज़ुर्ग भी इसकी चपेट में हैं। नशे का शिकार सबसे अधिक युवा वर्ग है। नशा करनेवाले युवाओं

में जहाँ युवा पुरुष हैं, वहीं युवा महिलाएँ भी इसकी शिकार हैं। यह मानव-समाज का सबसे बड़ा पतन और समाज के लिए अभिशाप है।

नशाख़ोरों का न वर्तमान होता है न भविष्य

युवावस्था में जब मनुष्य के अन्दर उन्नति और विकास करने की अधिक ऊर्जा व शक्ति पाई जाती है, तब वह युवा उस मूल्यवान घड़ी को नशे के सेवन में बरबाद कर देता है। वह अपनी बुद्धि, चिन्तन- शक्ति और सुध-बुध को बेहोशी की दशा में गुज़ार देता है। जब उससे यह पूरी सम्भावना ही नहीं पूर्ण आशा थी कि देश और समाज के विकास में वह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा और अपना उत्तरदायित्व निभाएगा, तब वह आशा के विपरीत देश और समाज पर स्वयं एक बोझ बनकर रह जाता है। वह गणना में समाज का एक सदस्य अवश्य होता है, लेकिन शरीर का एक नासूर और सड़े हुए अंग की तरह होता है। वह समाज के लिए ही नहीं, स्वयं अपने परिवार के लिए भी एक समस्या होता है, जिससे परिवार के सभी लोग परेशान रहते हैं। वास्तव में नशा करनेवालों का न कोई भविष्य होता है और न ही वर्तमान से कोई लाभ उठा पाने की उनमें शक्ति रह जाती है। अतः नशा करनेवालों का जीवन विनष्टप्राय होता है।

नशाख़ोरी और अपराध

हर देश की मुख्य समस्या—आतंकवाद, फ़साद, ख़ून-ख़राबा और चोरी-डकैती व लूटपाट है। इन पर यदि गहन विचार किया जाए तो इन सबकी जड़ में अन्य कारणों के अतिरिक्त एक मुख्य कारण नशाख़ोरी भी है। कई दुस्साहस के ऐसे काम हैं जिनको मनुष्य होशो-हवास में करने का साहस नहीं जुटा पाता, लेकिन नशा एक ऐसा सहज साधन है कि उसको ग्रहण करने के बाद कुछ भी कर सकता है। बहुत से नशाख़ोरों को मुफ़्त और हराम खाने की एक आदत-सी बन जाती है, स्वार्थी लोग उनकी इसी आदत का अनुचित लाभ उठाकर और उन्हें तरह-तरह के लोभ-लालच देकर उनसे उनकी नशे की दशा में बड़े-से-बड़े अमानवीय और आपराधिक कार्य करवा लेते हैं।

भूपेन्द्र कुमार जी (MSW, LLB, PG Criminology & PG Human Rights) भी कहते हैं कि 'नशा और अपराध दोनों जुड़वा बहनें हैं। जैसे-जैसे शराब

और ड्रग की खपत बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे समाज में अपराध की दर भी बढ़ रही है।'[1]

भूपेन्द्र कुमार जी ने ही अपने एक लेख में स्पष्टतः लिखा है कि "इन (नशीले पदार्थों) के उपयोग से देश के किशोरों, युवाओं सहित बड़ी जनसंख्या ज़ोखिम पर है और शराब-ड्रग का सेवन करके लाखों लोग विभिन्न प्रकार के अपराधों और सार्वजनिक क़ानून-व्यवस्था भंग करने में शामिल होते हैं। लगभग 80% बाल-अपराधी शराब व ड्रग का दुरुपयोग करते हैं। शराब आज के सभी हिंसक अपराधों में 50% का एक कारक है और एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 49% अपराधी गिरफ़्तारी के समय शराब पी रखी थी। शराब हिंसक अपराधों, हत्या, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, हमला, बच्चों आदि में निकटता से जुड़ा हुआ पाया गया है। शराब अक्सर हिंसा में एक कारक होता है। .....घरेलू हिंसा के मामले में 55% हमलावर शराब का सेवन किए हुए पाए गए व केवल 9% मामलों में अन्य मादक दवाओं का सेवन पाया गया। शराब और नशा करनेवाले माता-पिता में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करने की लगभग तीन गुना सम्भावना होती है। नशा प्रत्येक अपराध को जन्म देता है और सभी बड़े-छोटे अपराधों, बलात्कार, हत्या, चोरी, लूट, डकैती, राहजनी आदि तमाम तरह की वारदातों में नशे का सेवन लगभग 78 प्रतिशत तक है तथा बलात्कार जैसे गम्भीर अपराधों में तो यह दर 87 प्रतिशत है।"[2] सन् 2015 में नारकोटिक्स ड्रग एक्ट (NDPS) के अन्तर्गत 50796 और 2014 में 43290 केस दर्ज किए गए। इसमें सबसे अधिक पंजाब में 16821, उ॰प्र॰ में 6180, महाराष्ट्र में 5989, तमिलनाडु में 1812, राजस्थान में 1337, मध्य प्रदेश में 1027 तथा गुजरात में 73, गोवा में 61 तथा सिक्किम में 10 केस दर्ज किए गए।

अतः अपराध रोकने के प्रति यदि सरकारें गम्भीर हैं, तो उन्हें शराबबन्दी सहित नशे की हर तरह की चीज़ों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने और नशीली चीज़ों के उपलब्ध करानेवाले हर स्रोतों को बन्द करने पर गम्भीरता से विचार करना होगा और पूरी ईमानदारी के साथ इस पर अमल करना होगा।

1. दे॰ नेस्ट न्यूज़ 19 दिसम्बर 2017

2. उपरोक्त

सरकार और समाजसेवियों से एक निवेदन

यद्यपि पुस्तक में मदिरापान और नशा करने के मुख्य कारणों का उल्लेख किया जा चुका है। यहाँ सरकार सहित तमाम समाजसेवी संस्थाओं और सम्बन्धित लोगों से निवेदन करना चाहेंगे कि सभी उन कारणों पर और अधिक गहन विचार करें और उनको दूर करने का सफल प्रयास करें, ताकि एक स्वस्थ और पवित्र समाज का निर्माण किया जा सके। जहाँ शिक्षा की कमी है, वहाँ शिक्षा का प्रबंध करें और उनको समाज और राष्ट्र के प्रति उनके अपने उत्तरदायित्व का एहसास कराएँ। इसी प्रकार जहाँ नशा सम्बन्धी पदार्थ आसानी से मिल जाते हैं और खुलेआम बिकते हैं, उनको कठोर नियम के अन्तर्गत लाकर नशा की चीज़ों को दुर्लभ बनाने का पूरा प्रयास किया जाए या सभी प्रकार के नशीले पदार्थों पर प्रतिबन्ध ही लगा दिया जाए। इसके साथ ही एक ऐसा माहौल और वातावरण निर्मित करने का पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिए कि व्यक्ति नशा की ओर उन्मुख ही न हो सके और न ही नशा करने का विचार मन में ला सके। क्योंकि—**'सत्संगाद्भवति हि साधुता खलानाम्'** अर्थात् अच्छी संगति से दुष्ट लोग अच्छे बन जाते हैं। और **शुष्केणार्द्रं दह्यते मिश्रभावात्**—कि सूखी लकड़ियों में मिल जाने से गीली लकड़ी भी जल जाती है। अतः अच्छी संगति और वातावरण से मनुष्य में स्वतः सुधार आने लगता है। यदि व्यक्ति धार्मिक है, तो शराब पीने के 'पाप' का बोध और पारलौकिक दुष्परिणाम का डर उसके मन में बिठाएँ कि शराब पीनेवाले की परलोक में अत्यन्त दुर्दशा होती है। यदि व्यक्ति धार्मिक नहीं है और किसी धर्म में आस्था नहीं रखता है, तो उसे इहलौकिक और सामाजिक उपद्रवों का एहसास कराया जाए। इसके साथ ही उसे उसके स्वास्थ्य के प्रति सचेत किया जाए और यक़ीन दिलाया जाए कि नशा कितनी बुरी तरह शारीरिक दुष्प्रभाव डालता है।

शराब पीकर खुलेआम घूमने और सार्वजनिक स्थलों पर किसी भी प्रकार के नशा-सेवन पर प्रतिबन्ध लगाकर सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने को ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर देना चाहिए और नियम के उल्लंघन को संगीन अपराध की श्रेणी में लाकर शारीरिक और आर्थिक दण्ड से लेकर क़ैद तक

की सज़ा होनी चाहिए। इसी प्रकार हर ऐसी फ़िल्मों और सिनेमा को अमान्य ठहरा कर किसी भी प्रकार से प्रसारण की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए जिनमें किसी भी प्रकार के नशे की चीज़ों का इस्तेमाल करते हुए दिखाया गया हो और जिससे नशाख़ोरी को बढ़ावा मिलता हो। इसी तरह ऐसे प्रोग्रामों और मनोरंजन के ठिकानों को बिलकुल अवैध घोषित कर देना चाहिए और कदापि अनुमति नहीं मिलनी चाहिए, जहाँ किसी भी प्रकार के नशावर पदार्थों या मदिरा (शराब) का इस्तेमाल किया जानेवाला हो, बल्कि अनुमति ही इस शर्त पर दी जानी चाहिए कि शराब सहित किसी भी प्रकार के नशे की चीज़ों का प्रयोग नहीं किया जाएगा। इस शर्त का उल्लंघन किए जाने पर सख़्त सज़ा एवं जुर्माने का प्रावधान करके पूरी ईमानदारी के साथ सख़्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

इतिहास से ज्ञात होता है कि प्रमुखतः शराब पीने का चलन प्रारम्भ में अमीरों, रईसों और तत्कालीन तथाकथित सुसंस्कृत कहलानेवालों में ही पाया जाता था। उनकी नकल करके ही ग़रीब लोग इसकी चपेट में आते चले गए और आज यदि शराबियों की गणना की जाए तो सबसे अधिक संख्या इन्हीं ग़रीब लोगों की मिलेगी, जो दिन में जो मेहनत-मज़दूरी करते हैं, उसे शाम को शराब पीने में ख़र्च कर डालते हैं और घर पहुँचकर अपने घरों में कल्लेस करते हैं। अतः नशा करनेवाले अमीरों को चाहिए कि राष्ट्र एवं देशहित में और तबाह व बरबाद होती मानवता की रक्षा हेतु जितना जल्द हो सके और जैसा भी हो सके मदिरापान का परित्याग कर दें। वे अपने किसी भी प्रोग्राम में मदिरा का इस्तेमाल किंचिद्मात्र भी न होने दें और सरकार द्वारा मदिरा एवं नशा-निरोध हेतु बनाए गए क़ानून का सख़्ती के साथ स्वयं पालन करें और लोगों से भी उनका पालन करवाएँ और साथ ही सरकार और सरकारी तंत्र यदि इस सन्दर्भ में थोड़ी भी लापरवाही दिखाए तो सामाजिक कार्यकर्ता एकजुट होकर उनके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दें और उन्हें विवश कर दें कि इस सन्दर्भ में वे अपनी पूरी सतर्कता और पूरी ईमानदारी के साथ अपने उत्तरदायित्व का निबाह करें।

यदि राष्ट्र के शीर्ष पर बैठे लोग और समाज के सुसम्पन्न एवं अग्रणीजन

नशे के इस अभिशाप के उन्मूलन हेतु थोड़ी भी निष्ठा के साथ सहयोग और अपनी सतर्कता दिखा दें तो आशा है कि इस समस्या को दूर करने में और अधिक सहजता बढ़ जाएगी। क्योंकि—**'सदैव हि गुरोर्वृत्तमनुवर्तन्ति मानवाः'**[1] अर्थात् मनुष्य स्वभाव से ही सदैव बड़ों के आचरणों का अनुसरण करते हैं। और फिर—**'सर्व बलवतो वशे'**[2] अर्थात् यह सब जगत् बलवान के वश में होता है।"

नशा-निरोधक दिवस

26 जून, एक ऐसा दिन है कि जिस दिन पूरे विश्व में "अन्तर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस" मनाया जाता है। इस दिवस के मनाने का निर्णय 'संयुक्त राष्ट्र सभा' ने 7 दिसम्बर 1987 ई॰ को प्रस्ताव संख्या 42/112 पारित करके लिया था और सभी राष्ट्रों को आदेश दिया था कि 26 जून को "अन्तर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस" के रूप में मनाया जाए। तभी से 26 जून को वैश्विक स्तर पर 'नशा-निरोधक दिवस' मनाया जाता है। इस दिन लोगों में नशा के दुष्प्रभावों के प्रति जागृत करना और हर प्रकार के मादक द्रव्यों से दूर रहने के लिए उत्प्रेरित करना मूल उद्देश्य होता है, ताकि लोग मादक द्रव्यों के उपभोग के परित्याग के लिए स्वयं मानसिक रूप से तैयार हो सकें और हर तरह के घातक नशा से स्वयं बचने लगें। यद्यपि अब तक जिस प्रकार यह दिवस मनाया जाता रहा है वह कोई सन्तोषप्रद परिणाम देनेवाला नहीं रहा। इस दिवस को और अधिक ज़ोर-शोर से मनाए जाने की आवश्यकता है। इस दिवस के आने से पूर्व ही हर देश के सभी सामाजिक और सरकारी तंत्र को चाहिए कि इसे सफल बनाने में पूरी तरह तल्लीन हो जाया करें और इतना प्रचार-प्रसार किया करें कि बच्चा-बच्चा आभिज्ञ हो जाए कि यह 26 जून क्यों मनाया जाता है। इस दिन हर आफ़िस और संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए और नशा के विरुद्ध एकजुटता का प्रदर्शन किया जाना चाहिए। हर संस्था और

1. शान्ति पर्व 267/26
2. अनुशासन पर्व 34/3

कार्यालय के मुख्य अधिकारी की ड्यूटी में यह सम्मिलित कर देना चाहिए कि वह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को हर प्रकार के नशा से दूर रहने के लिए उत्साहित करें और आदेश दें कि किसी भी कर्मी को नशे की दशा में आफ़िस में आने की अनुमति नहीं है और इस आदेश के उल्लंघन पर सख़्त कार्रवाई की चेतावनी दी जानी चाहिए। इसी के साथ नशे से दूर रहने के लिए उत्साहित करने के लिए उन कर्मियों को प्रमोशन में प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो यथोचित योग्यता रखने और अन्य नियमों की पाबन्दी के साथ-साथ सभी प्रकार के मादक द्रव्यों के सेवन से भी दूर रहे हों।

इसी प्रकार इस दिवस के मनाने में हर गली, कूचा और मुहल्लों में सामाजिक कार्यकर्ताओं और सरकारी व ग़ैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के जुलूस, प्रभात-फेरी, निबन्ध-प्रतियोगिता आदि से लेकर जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं का आयोजन बड़े पैमाने पर किया जाना चाहिए, जो मादक द्रव्यों के सेवन से होनेवाली हानि और दुष्प्रभावों पर आधारित हों और लोगों को नशे के प्रति जागृत करनेवाले हों। इन सबके लिए सरकारी सहायता भी मिलनी चाहिए यानी सरकार को चाहिए कि इस दिवस के मनाने हेतु एक निश्चित फण्ड का निर्धारण करे और उसको पूरी ईमानदारी के साथ सम्बन्धित लोग सम्बन्धित कार्यक्रमों और विषयों पर ही ख़र्च करें।

नशामुक्ति केन्द्र

भारत सहित पूरे विश्व में नशा की लत में पड़ गए लोगों को नशे की चपेट से निकालने और उनके इलाज हेतु अपने विभिन्न नामों से केन्द्र व अस्पताल चलाए जा रहे हैं। इनमें कुछ शासकीय हैं और कुछ ग़ैर-शासकीय। यदि नशामुक्ति-केन्द्रों की तुलना की जाए तो शासकीय केन्द्रों की अपेक्षा अशासकीय केन्द्रों की संख्या कई गुना अधिक है। शासकीय केन्द्रों और अस्पतालों में क्या सुविधाएँ हैं, यहाँ उनको अनदेखा करते हुए अशासकीय केन्द्रों के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करना चाहेंगे। प्रायः अशासकीय नशामुक्ति केन्द्रों में न ही प्रशिक्षित चिकित्सक होते हैं और न ही यथोचित दवाएँ। प्रशिक्षित चिकित्सकों के अभाव के कारण ही प्रायः केन्द्रों के चिकित्सकों के क्रूर व्यवहार की शिकायतें और ख़बरें प्रायः समाचार पत्रों और मीडिया में

आती रहती हैं। वस्तुतः नशे की लत में पड़े लोगों का मर्ज़ मानसिक और शारीरिक दोनों ही प्रकार के होते हैं और दोनों ही क्षेत्रों के विशेषज्ञ चिकित्सकों की उनके इलाज में आवश्यकता होती है। कभी-कभी मानसिक रोग का इलाज शारीरिक रोग के इलाज की तुलना में कहीं अधिक जटिल होता है, क्योंकि मानसिक रोग एक अदृश्य मर्ज़ होता है। यही कारण है कि मानसिक रोग की जाँच में कभी-कभी सभी जाँच विफल होती प्रतीत होती हैं। अतः नशे की चपेट में आए हुए व्यक्ति के इलाज हेतु शारीरिक मर्ज़ की तुलना में मानसिक चिकित्सक की अधिक आवश्यकता होती है, जिनका निजी नशामुक्ति-केन्द्रों में स्पष्ट अभाव देखा जा सकता है और जहाँ विशेषज्ञ पाए जाते हैं, उनके इलाज का शुल्क इतना अधिक होता है कि आम आदमी के पहुँच से बहुत दूर होता है। यद्यपि कभी-कभी साधारण केन्द्रों की फ़ीस भी ऐसी होती है कि आँख में आँसू आ जाए, जबकि शराब पीनेवाले परिवार की आर्थिक दशा पहले ही दयनीय हो चुकी होती है। जब कभी परिवार का मुखिया ही शराब व अन्य नशे की चपेट में आ जाता है तो परिवार की आर्थिक दशा और भी तबाह व बरबाद हुई होती है। उनके खाने-पीने के ही लाले पड़े होते हैं, इलाज के ख़र्च की बात तो दूर की होती है। अतः सरकार को इस दिशा में भी विचार व विमर्श करके ईमानदारी के साथ सेवा करनेवाले केन्द्रों को जो वास्तव में विशेषज्ञ रखते हों और नशा-मुक्ति सेवा हेतु गम्भीर हों उन्हें शासकीय सहायता राशि भी प्रदान की जानी चाहिए और आवश्यक सुविधाएँ भी।

नशा करनेवालों से एक निवेदन

अपने मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करें

अन्त में नशा के दीवानों से निवेदन करना चाहेंगे कि आप अपने जीवन के महत्व को समझें। मनुष्य के लिए इहलोक की सबसे बड़ी सम्पत्ति स्वास्थ्य और जीवन-अवधि है और इनसे भी बढ़कर सामाजिक प्रतिष्ठा है, जिसके महत्व के सम्बन्ध में कविवर रहीम ने कहा है कि—

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।।

'पानी' अर्थात् मनुष्य की प्रतिष्ठा, मोती की चमक और चूने का पानी यदि एक बार ख़त्म हो जाए, तो फिर ये चीज़ें दोबारा कभी जीवित नहीं होतीं यानी निरर्थक होकर रह जाती हैं।

जब मनुष्य मादक द्रव्यों का इस्तेमाल करने लगता है तो नशामुक्त सुसभ्य एवं सज्जन लोगों के मध्य मनुष्य का मान-सम्मान और प्रतिष्ठा जैसी मूल्यवान चीज़ें विनष्ट होती जाती हैं। मनुष्य यदि वक़्त रहते नहीं चेतता तो उसके हाथ सिवाए पश्चाताप और जीवन में निराशा और विषाद के कुछ नहीं लगता। हर पल कुढ़-कुढ़कर अश्रुपात करते जीता है। अतः जिनसे जीवन रोते हुए बिताना पड़े उनका परित्याग समय रहते तुरत कर देना चाहिए। बुद्ध महाराज कहते हैं—

न तं कम्मं कतं साधु यं कत्वा अनुतप्पति।
यस्स अस्सुमुखो रोदं विपाकं पटिसेवति।।

(धम्मपद 5/8)

अर्थात् "वह काम करना ठीक नहीं, जिसे करके पीछे पछताना पड़े और जिसके फल को अश्रुमुख (रुआँसा या एकाएक रो पड़नेवाला जैसा) रोते हुए

भोगना पड़े।"

ईश्वर ने आपको क्या ख़ूब स्वस्थ और पूर्णांगों के साथ यह जीवन दिया है। उसके उपहार का सम्मान करें और मनुष्य बनकर जिएँ, पूरे होशो-हवास के साथ जिएँ।

अपना महत्व समझें

हर मनुष्य इस जीवन में लोक-परलोक से लेकर समाज और राष्ट्र-विकास के सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है। अपना और अपने कुल-परिवार को सुसम्पन्न बनाकर एक से एक ख़ुशहाली दे सकता है। लेकिन नशे की लत में पड़कर मनुष्य इन सबको खो देता है। अतः नशा करनेवालों को चाहिए कि हर प्रकार के नशे का परित्याग करके जीवन में समय और धैर्य को स्थान दें। नुक़सान देनेवाली हर चीज़ का आप परित्याग करें। जीवन को जीवित होकर और पूरे होशो-हवास के साथ जिएँ। इसी में लोक-परलोक का विजय है और जीवन-सुख भी। नशा कर लेने के बाद मनुष्य एक बेहोशी की अवस्था को पहुँच जाता है। कुछ लोग इतने बेहोश हो जाते हैं कि मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति और उस नशाख़ोर में अन्तर नहीं रह जाता सिवाए हृदय-धड़कन के। आशा थी कि दिग्विजयी बनेंगे, लेकिन नशा करके जीवन से ही हार बैठते हैं। न जीवन का रस रह जाता है, न कोई जीवन-योजना, न किसी शत्रु को पराजित करने का विचार।—**न मृतो जयते शत्रूञ्जीवन् भद्राणि पश्यति** (वनपर्व॰ 252/39) अर्थात् मरा हुआ शत्रुओं को नहीं जीतता जीवित ही सुख के दिन देखता है।

नशे की लत को छोड़ें और वीरता दिखाएँ

यदि आपको किसी भी नशे या मादक पदार्थ के सेवन की लत लग गई है, तो उसे छोड़ने में अपनी बहादुरी और साहस का प्रमाण दें कि यही अस्ल वीरता है। गौतम बुद्ध ने कहा—

सो सहस्सं सहस्सेन संगामे मानुसे जिने।
एकं च जेय्यमत्तानं स वे संगामजुत्तमो।।

(धम्मपद 8/4)

अर्थात् जो संग्राम में हज़ारों मनुष्यों को जीत ले उससे उत्तम संग्राम-विजयी वही है जो स्वयं को जीत ले।

अतएव मन को किसी भी ग़लत राह में जाने से रोकें और किसी भी लत को अपने ऊपर प्रभावी न होने दें और यदि नशे की लत प्रभावी होने लगे या हो गई हो तो उसे तुरन्त चारोचित्त कर दें यानी उस लत पर विजय पाकर उसकी चपेट से अपने आपको निकाल लें। ऐसा करने में आपकी बहादुरी, आपका साहस और आपका पुरुषत्व प्रकट होगा। समाज में प्रतिष्ठा, मान-सम्मान और सबसे बड़ी बात कि आपका स्वास्थ्य वापस आ सकता है और पीड़ाहीन जीवन जी सकते हैं।

अन्तिम बात

मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। हमारे स्रष्टा पालनहार प्रभु ने एक बड़े और महान उद्देश्य के लिए हमें पैदा किया। मनुष्य का शरीर और उसकी समस्त योग्यताएँ एवं क्षमताएँ ईश्वर का महान उपहार और एक अमानत है। अतः इस अमानत की रक्षा करना और इसे बर्बादी और विनाश से बचाना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। यह बात हमें धर्म-ग्रंथों में स्पष्ट रूप से बताई गई है कि इस शरीर से अच्छे और भले काम लेने का परिणाम हमें कुछ-न-कुछ इस दुनिया में भी प्राप्त होता है और मृत्यु के बाद भी इसका सुफल अवश्य मिलेगा। इसके विपरीत बुरी आदतों को अपनाने का दुष्परिणाम भी हमें इस दुनिया और परलोक में भोगना होगा!

●●●